

আনন্দ-বিলাই

--- 660---

কাঞ্চন নগরপতি নূপ সভাধৃতি। यभीन स्वाद भाष स्माट स्वीरि ।। বন্ধি বারি কলনি জিনিরে স্থাতীর। লচণ্ড প্রতাপ:তাঁর বেখন মিছির 🏾 অভুল ঐশ্বর্যা তার ফে করে গণেন। প্ৰধাৰ সাৰজ্ঞ বিজ্ঞ বড়ই স্থাসন। প্রজাগণ প্রথী মন নৃপের ক্লপার। প্রক্রে করি জ্ঞান পালেন নবায়। পুরুষ দয়ালু রাজ। কম্পতর প্রায়। भावभा अभन्न करन गर्यका भगन्त । ্ছক জনে মন্ত্র ভিত ভূপের শাসমে। 🗀 শিক্ত জনে মিন্টালাপে তোৰেন যতনে। ্ঞজার পীড়ার শাস্তি হৈতু বৈদ্য কতন বিদ্যালয় স্থাগিত আছরে কত শ্তা

नम्म-विलाम।

তুংখ করিতে খোচন।

. হা সদাত্রতের **স্থাপন।** পদাতিক কে করে গণন। ,হার প্রভাবে শার্ণকায় বৈরীগণ। নগরের শোভা যত কে করে বর্ণন। না দেখি না ভান যেন ইন্দের ভবন ॥ স্থানে স্থানে শেভি কত কুপুন উলানে ' . फूटल भूटल मधुकरत मधु करत शान ३ ছুই ভাষ্যা নূপতির ভূধনমোহিনী। হাত ভাব কটাকেতে কামের কামিনী 🛊 প্রথম প্রেয়দী পক্ষে পুত্র হয় জন। সর্বে গুণান্থিত অভি স্কুদুশা 1টন। পরে শুন কবিহা পক্ষের বিধ্রণ। रम शर्ड किंगिल श्रुक्त मर्क स्रमेश्राम ল্যেষ্ঠা হতে শ্ৰেষ্ঠা দেই অতি ৰূপৰতী। ৰূপে ভার কাছে রতি হবে এক রঙি। ভূপতির প্রাণাধিক প্রিয়তমা সতী। সস্তান বিহীনে মাত্র মনে থেদ অভি। সর্বেক্ষণ রহে রামা ঈশ্বর সাধনে। পুত্রের কামনা করে অভি শুদ্ধ মনে 🕼

এই ৰূপে নিত্য নিতা করিতে সাধন ! হইল তাহার পরে গর্ত্তের লক্ষণ। खनि नृश्मिनि यूथी स्टेटनन छात्र। দাসীগণে আজ্ঞা দিল শুভত সেবায় ঃ ভবে ক্রমে ক্রমে গর্ত্ত সংস্থা স্ইল : চ ভবর্ত্তী লক্ষণের পুত্র প্রসবিষ । কি আশ্চর্যা সে নৌন্দর্যা অতি অপৰূপ: সেবর্ণ দেখিয়া স্বর্ণ হইল বিৰূপ ॥ সংক্ষেত্র ৰূপ হেরি চাঁদে পড়ি কাঁদে। ্ৰত গিয়ে র**জ**্বদিয়ে দিবাকরে বাঁদে চ इक वरा शुक्र खिनि इंड शनत्व। ***মর্গের দল সিনি অতি প্রকোমল।** আৰূপ ভেরিয়ে ৰূপ দবে চমংকার। দুত প্রির ভূপতিরে দিল সমাচার।

जिशमी।

স্পুত্র জন্মিল শুনি, জাননিক নৃপমণি, জন্তঃপুরে গিয়ে নির্থিল। পাত্র মিক্র সভাজন, শুনি এই থিবরণ, সকলেতে পুলকে পুরিল।

वानस-विवास

নিয়াশ্বর তানাথেরে, স্থদরিক বিজবরে, चादाक्का भूतित्य पित्र धन। আপামর সাধারণে, তুর্বিলেন বছ ধনে, সংখ্যা তার কে করে গণন। অমাত্যাদি ছিল হত, অনুচঃ শত শত, ব্যক্তি বুকি সবায় ভূমিল। নৃত্য গীত বাদাভাও, অঞ্চ অম্ভুত কাণ্ড, মচোৎসৰ হইতে লাগিল 🛚 পরে এর বিজগণে, ডাকি নৃপ **স্থাদ**নে, करहर सरलक विवत्र।। জন্মিল আমার প্রভ, শক্ষরপ লক্ষণ যুত, গণি তাহা কর নিজপণ। কোন গ্ৰহ কোন স্থানে, ভবিষ্ট্ত বৰ্ত্তমানে, कणाकन कनाइरव किरव। কেবা হিচ্চি দৃটি কার, নির্ণন্ন করিছে ভার, জন্ম পত্রী প্রকাশ করিবে। আৰকা পেৰে ৰুখগণ, নিজ নিজ নিকেতন গিরে বদে পঞ্জিকা লইয়ে। গণনায় হরে ময়, ছিবু করি ক্ষা লয়, ফলাফল দেখেন ভাবিয়ে 🗓 🐃

ভাগন্দ-বিলাস।

গ্রহ উপগ্রহ চয়, শুভকারী সমুদয়, কেহ নয় তার বিপরীত। मरस्राय रूरेरव ठरंद, सन्ध পতी निश्चि मरदः ন্পের নিকটে উপনীত। अरक अरक वृष्णन, जन्म পত्री विदर्शन. भगनाम याक्ष स्टब्स्थि। माम रुप मिता कल, खूल खुका म ७ भेल, প্রকাশিয়ে কহিতে লাগিল 🎚 कान शरू कृष्टे नहा, जुष्टे लिथि ममुनस, खन तात्र कुमारद्वत छन : भोरा वीया श्रवाती, जनाश नाधरन क्रम. मका भारख इहरेव निश्रुत ॥ में बीट्रिश्च हरत्र ताजा. भारतन गर्वात भूका, ইকে কিছু নাছিক সংখয়। हर्ग स्टब्स नाम, स्तरमन खन्याम, बिक्छ अभित्व सहालश । अनि श्रुविक्छ हिट्छ, मटलाद्यत्र वाहिषिट्छ, ভাষিতে ভাষিতে সম্ভবে वर्ष यम क्यानि जूर्न, मरमावय कति भूर्न, विभाग कतिण व्यन्तर्ग ।

ভদন্তর নৃপপুত্র, পেলেন বৃধির স্থান, জিনি সিভপক শশ্বর। পক্ষে পক্ষে মাল গত, সময় সমূরি কত. গত হইল চতুর্থ বংসর 🛭 পঞ্চ বৰ্ষ হল যবে, দিব্যা শিক্ষা হেতু ভবে, শिक्षरक कतिल निर्देशकन। ভাষাতে নরেক্র স্থত, **নর্বেগুণে গুণ**যুত, শ্রুত মাত্র করে অধ্যয়ন। ব্যাকরণ আদি যত, শিখে শাস্ত্র নামা মত, স্থানবৃদ্ধি শ্রুতিধর অতি। ধনুর্ফেদ রাজনীতি, সব্য অঙ্গন্ধার স্মৃতি, উপাখ্যান পাঠে ইৰ মতি॥ নৃপস্থত এই মতে, পঞ্চদশ বৰ্ম গতে, সর্বাস্থ্যে হইল পণ্ডিত 🛵 विट्रायण मुनतास, बानहार्थ नाहि माने विक वर्ग भट्टेंड केरिक 🖟

কুমারগণের নানা মত জীড়া ও নৃপ-তির স্বপুত্র সহ মুগরা।

তবে রাজপুত্রগণ মন অভিলাধে। রতে বন্ধুবর্গ দহ হাস্য পরিহাসে। কথন বেড়ান অশ্ব গল আরোহণে। নদীতে ভ্রমেন কভু তরণী বাহনে ॥ বিশেষ সাহসী বড় সূরসেন রায়। সবাকারে লয়ে কভু কাননে বেড়ায়। স্থীকার করিয়ে তথা মূগ অগণন। প্রত্যাগত হন পুনঃ আপন ভবন।। এই ৰূপ নিত্য নিতা নানা ক্ৰীড়া করে। व्यान्तर्ग वात्रांत अक अन कात भटत । क्लामिंग कुर्वाच कड़िला है को मरन ऋशूक्य महिक पाव मृश्वता कावरण ॥ এত জাবি পুজাগণে ডাকি নররায়। अकटनन भागनात सम जिल्लास ।। শুনি কুট পুঞ্জাণ ভাতে সাম দিয়ে।

अमिमा-। रहा म

• তবে रेमनाधाटक डाकि ज्ञ बाका मिना। मरेमरमा माख्रिस्य भरव श्रेष्ठ्रच हरेका ॥ নিছ সাল করি রাজা পাত্র মিত্র সনে। वाश्ति रहेरत हरन कानन अभर्।।। गाउक जुतक रेमेना जामश्या मरक्रा । সলীন চড়ায়ে সবে চলিল রঙ্গেতে।। ু রাজধানী ছাড়াইয়ে প্রবেশি কানন। নানা স্থানে নানা শোভা হেরে অগণন।। নানা জাতি বৃক্ষ তার ফল ফুল ধরে। কত মত পক্ষী বসি তাহে রব করে॥ কত চক্ৰৰাক ভাকে বুসি তৰ্পৱে। यन्त्र सम्ब वाह्न वटर हिन्छ विक्र करत ॥ পুল্পের সৌরতে বন সৰ আম্বেদিত। मधु भान करत जानि रुद्ध इति छै।। ভিনৰ দেখিয়ে দৰে পুত্ৰকত মনে। रूषा २८७ शिन अक कुर्रम कान्द्रन ॥ त्म शास्त्र प्रशूटक नत दिनदत्त र्याजना तर शक्त शकी दाय दक करत श्रामा ।। ভার পরে কিছু দুরে গমন করিব।

হৈরিল অপূর্বে এক মুগ দেই বনে। नृशास्त्रीम् स्वरंत्र जात्र यक्ष टेमनागरण ॥ প্রমানে প্ডিরে তবে কুরঞ্ তখন ! ভূপের সন্মুখ দিয়ে করে পলায়ন।। प्रिथितः अभिने जूभ श्रीमिटलम भेद ! मा जिनिन स्मर्रे जेख मुद्रशंत ज्यस्त ॥ তবে শ্বতি বাঞা মতি হয়ে নররায়। ্কুরকের পাছে পাছে ভুরক্স ছুটায়।। অশ্বোপরি ছিল নৃপ পুত্র সপ্ত জন। रेमना नक हाफ़ि मत्व कतिक शयन। তার পরে বহু দূর যুাইতে ষাইতে। কোষা গেল মূগবর না পান দেখিতে।। रिनाशीन क्रमी यारा दक करत थंथन। वन स्थि अपने रेण भएतत निवन । দেখি হেন অগটন বলে একি সায়। সায় স্থায় বুঝি কারিপাকে প্রাণ বার । कावबनी, मृश्व देशाद्य किन्न नक्टरे । चुत्रके जाविन था। बात रा कि घटके ब्राइ में हिसाबिक एवेटन बार्या विश्वेस सरिड एनिस्त्रन मिल सन्।।

পথ শ্ৰীমে সন্ধ ওমে দিগুভন হইয়ে। উঠিলেন রাজ। এক গিরি পর্য়ে গিরে। অভি সে স্থরম্য জান শোভা চমৎকার। সে শোভার তুলা শোভা নাহি দেখি স্থার। হরিকে ভূমিতে তথা মুপ নৃপস্কত। 🐬 হেরিল যতেক শোভা অঞ্চত অন্ত । কৃত মত কলবান কৃষ্ণ অগণন। কার সাধ্য কেবা পারে করিতে বর্ণন।। আকরোট কিশ্সিশ বেদানা অঙ্গুরা নিচু পিচ নেও আত্র কাঁঠাল খজ র। নারিকেল বেল তাল্প জাম আনারস। नाना संख् कन कुछ भट्ड नाना देन 📳 कान द्वारंन शूर्लामारन शूच नाना जारि विजनी लोगान होता रवा स्वी काछि कारिनी राजनींगरका गेटका कार्याति। গলরাম টগর দোপানিবেড় পাড় 👭 **उथात्र विश्दत्र शकी ना रुग्न अगमा।** रिवामन कविशामि (कांकिन मध्यो । मरनार्वे एक्बेब विम जॅबलद्व ।

তার মধ্যে ছিল আর এক শুক্রর। স্থাচিত বিচিত্র চিত্র দৈখিতে সুন্দর। किया जात हमें काह एक त गठेन। यूर्व द्वर्ग मम पाउ स्ट्रांजन । গলা বেড়া বেন কত সুদীপ্ত প্রস্তরে। ছিনি প্রভাকর প্রভা প্রভা কলেবরে॥ 'हित्रि नृष्णुकार्य मानम इहेरत । तिश्रातिन पूर्वि एति व्यक्ति व्हित्स । माहिত नवात वाशि नित्रशि विस्त्रा ওকে হেরে হথ বাড়ে জুড়াইল অঙ্গ। ৰলৈ কভু ৰাহি দেৱি হেৰ অপৰপ। ভুবনা কি দিব তার নাহিক স্বৰূপ।। স্বীয়া ক্লিকাশ করতে বুকি বিধি। निष्करन निर्माण शरम निर्मित क निर्मा। अहे नेश करोतेश स्टेडिटर हाजन k মলে। সুবে মান প্রকে ধরিতে তথ্য।। রাকার বুরিকে ভার শুক প্রকীরর। के जिस्से वानन केन्द्र वानन केन्द्र है। CACHE MACE CAN BEIN TO THE

शरत जुल हजूलाच नितीक्त करता ना ८ इट्स शकीदत देशन का उन्न अफदत ॥ গরবো ব্যাপিত বেন ভুড়াক দংশনে। তেমতি হইব ভূপ বিহন विহনে।। कुषा कृषा मृत्त शत शकी थान खान। তত্ত্ব করি ভূমে রায় হইয়ে অজ্ঞান।। ्र जाणायत अक्तत हहेटहा जनहा। देनववाणी नम काशी बूक्त एटंड कम्र ॥ ধরিবে আমারে ভূপ কি তব শক্তি। अनातात्त्र भूरमा भाषि कांत्रवादत शिंह । (कन मम अगाअन ना युनिएत तार । वालुटकत मल हार धतिए आमात्र॥ দেখি পকা জাতি বুৰি অবজ্ঞ তোমার। आमि धता ना मिट्न भेतर् नाशा काता। তথাপি ভোসারে ধরা দিতে ধরাপতি দ भारह नाथ मदन किस तो नाति नरश्चिति। चाहि गात्र कारहे भन्ना चुगत देत बने। मा दर्जित्म श्रंब छात्र भन्नात्र भएन । नः श्री का बात जत्म किहा मा कतिएते। केष क्याहरल (बाट्स भागादस भारेदन ॥ -

যদি মোর একথায় না হয় প্রত্যয় ৷ প্রতারার্থ কহি বাহা শুন মহাশয় ॥ পক্ষী কুলোত্তৰ আমি কিন্ধু জাতীয়র। জগতে নাহিক কিছু মন অন্যোচর !! ভূত বৰ্ত্তমান ভবিষাতে ধা হইনে। নিশ্চিত বলিতে পারি নিশ্চিত জানিবে।। এই মত বাক্য কত কহিছে রাজায়। আশ্রাহে গ্রাহ্ম জন্য শূন্য পথে ধার।। ছেরিয়ে পক্ষীর গতি ইতাশ হইয়ে। मदनाष्ट्रंदेश अद्यासूद्रश्चाद्रतम् विनद्रश् ভূপেরে ভাবিত দেখি ভূপতি নন্দন। Cक एक करत शृह्चदत करत्र निरनमन ॥ কেন পিতঃ বৃহয়াছ বিষয় বদন। कि अकादन अहे जादन अब असा मन ॥ हिडी शतिरति श्रंह प्रनष्ट जतास । रिक शहरा शकी शाम मिर वाशनाइ।। नुज बाही नुश्रमी छन् नमून्य। बर्द्ध राजा भार रार्थ जान गुर्क नहा। अतिदेश जीवनी मात्र अप मा भारेता সন্ধ্র বনে কেন এছাত্র রহিব।।

म्हिन भिष्य मञ्जन कहित्य मृद्धि भद्र । लाठाहेद हात्म <mark>कारम यंख मूखशद्य !</mark>। তাহে যদি নাহি হয় কার্যোর সাধন। তথ্ন জানিবে মম নিতান্ত মরণ।। এত বৰি দীঘ্যাস ছাড়ি নরপতি। চলিলেন ধারে ধারে স্বপুদ্র সংহতি॥ किछ् १८४ देनना नदक इहेन मिलन । সংব মিলি নিজু রাজ্যে করিল গমন।। নিবানে আসিয়ে ছুপ ভাবিত অন্তরে। কি প্রকারে পক্ষিবরে গাইব সত্তর।। সভার বনিরে রায় সকলে ডাবিল। द्धारम हाम्मे मुजनर्ग त्थात्र कृतिन ॥ নৃপাজ্ঞাতে বত দূতে চতুদিকে ধায়। मारा चारन सरम जुतू मनाम ना भारा॥ भूष भ महाम **छनि ज**क्ति इंदेर।। ভাবে बनि भिवा मिलि भटकत नाशिखी। পিতার উদাস্য ভাষ হেরি পুত্রগ্রা श्रुक्तमण मद्द श्रुमः कदत्र मिद्रम्म ॥ यस्य रहा यहि कामा नवाकात्र। प्तना व्यक्तां करह त्यांका हारेत प्रशास स

বেই দেশে পাৰ দেই পক্ষীর উদ্দেশ।
কিন্তামণি চিন্তা করি বাব সেই দেশ।
কেন্ত শুনি নৃপমণি আননিত ক্ষতি।
পুত্রগণে হর্ষননে দিল অনুমতি।
তদন্তরে দিন ভিত্র করিল রাজন।
ভিত্রপদ ভাবি দিজ করিল বর্ণন।।

শুকপক্ষী অন্বেষণে কুমার-গণের যাতা।

ভূপতির অনুমতি লবে পুত্রগণ।

ডাকি বত ভূজাগণে কহেন ভখন।।

শুক অবেবণে বাব নূপের আজ্ঞায়।
পথের যতেক জ্ব্য আনহ অরার।।
ভূমি আনন্দিত হরে দাসগণ যত।
আমিতে লাগিল ক্রয় প্রেরাজন মত।।
অমাধ্যক আনিয়ে এতেক বিররণ।
স্থাকিত অম্ব সপ্ত আনিল তখন।।
পরে অক্রাধ্যক অক্র মানিরে ত্রার।
পরে বরে ভূমি দিব ক্রের হালার।।

পথের সঙ্গল হেডু করি বছ যত্ন। .. वह भूना इस योज नग़ तिहे ते दूं ।। নিজ নিজ সুসাজ করিয়ে সংগ্র জনে। প্রেণমিল গিয়ে পিত। মাভার চরগে।। তদন্তরে অস্থোপরে আরোহণ করি! গমন করিল ও চক্ষণে যাত্রা করি !! ছাড়াইয়ে-রাজধানী আর নিত দেশ । অপর রাজ্যেতে সবে করিল এবেশ। मम भर्मी वृद्ध जीर्थ कंतिरत्न जग्ना। পরে প্রবেশিল এক গছন কানন।। দেখিল তথায় সিংহ বাাড্র অগণন। ভয়কর রবে সবে করয়ে গর্জন।। শুনি সব ঘোর রব ভীত হয়ে মনে। কোথায় আশ্রয় পার ভাবে দাত জনে।। হেন কালে পুজোদ্যান দেখিবারে পার্। कनवान दह दृक्त आहरत उदात ॥ रहरव वालात भहे कतिएत मनन। मनासूर्य हाल ताजशून गांड जन। ৰাইয়ে দেখিল এক তেজস্বী সম্যাসী नवन भूमिट्स साट्ह देशकामान यमि ॥

क्यांत नकरण छर्त हरत हर्गिछ ।

श्रीहरी निर्मा छथा इल छथनीछ ॥

शाहरी निर्मा छरत श्रीक अधिक अधिक ।

स्मान्दत नवाकारत वनाम इतिछ ॥

स्मान्दत नवाकारत वनाम इतिछ ॥

स्मान्दि मृत हरत निर्मि विश्वन छथा।।

रमिरिष्ठ रम्भिर्ट निर्मि इल खबनान ।

छिठिल अज्ञार मृद्य स्मात छनवान ॥

स्मान्दि अज्ञार मृद्य स्मात छनवान ॥

समान्दि अज्ञार मृद्य स्मात छनवान ॥

समान्दि अज्ञार स्मान्दि स्मान ।

समान्दि अज्ञार स्मान्दि स्मान छिरत ॥

समान्दि अस्मान्दि स्मानन छिरत ॥

समान्दि अस्मान्दि स्मानन छिरत ॥

কুমার সকলের কাননে ভয় প্রাপ্তি।

প্রশাস্তর সতি জন, এড়াইয়ে সে কানন, প্রবেশ করিল জনা বনে। ভাবি সেই প্রয়োজন, চিন্তা করে সর্বক্ষণ, বিষয় বিষাদ ভাবি মানে।

কোপা আছে ভোগায়াবাৰ, কোপায় সেধন পাৰ, रक्सान वा स्ट्रेस मिलन। ष्यमा हिन्दा नाहि बाब, पिटा मिनि पानिदाई. শ্ববাৰে চিন্তে সংগ্ৰহন ।। পরে টিভা পরিঘরি, টিস্তামণি চিস্তা করি, শীঘ্র গতি গমম করিল : তথা হেরি ঘোর বন ভরে ভীত সাত জন, সরুম্পর ভাবিত হইল।। উফ রুক্ষ নানা জাতি, সমভাব দিবা রাডি. रहरी बाँधा ना भाग (निहिट्ड। ভঃচ্ছে প্রুণণ নব, করে তাক্ষর রব, শুনি ভয়ে না পাংক্র ঢ়লিতে। সচিন্থিত হয়ে পরে. উঠে উচ্চ বৃফোপরে, (मध्य स्वा हता वहाहरत। দেখিতে দিখিতে নিশি, উপনীত হল আসি, ং দেখে কত ফণিমণি অলে ॥ महिल इरेश शहर मुद्ध गाहि वाका नहत्र, হেরে মৰে সর্পের মূরতি। অতিশয় ভয়ত্বর, গজে বেন জলধর, নিশ্ববৈতে প্রনের গভি।।

কীট পশু পক্ষী ভক্ষে, এসব দেখিয়ে চফে, र्रील बुद्ध कर नारायण। मिक छट्य क्रमा कति. जाप कत्र मदंव हति, নাম তব প্তিওপাবন ॥ এইৰপে অন্ধানিশি, গত হল বুকে বসি, অহি দব গেল নিজ স্থানে। स्तरमन करह छरव, मन वांका कुन मरन, স্থাবে নিদ্রা যাও ছয় জনে।। हिसा ना कतिर मतन, आमि तब कानतूर्व, ख रव भ रहेक जामाव। এতেক শুনি বচন, হুক্ষেতে করি শরন, নিত্রা গেল ছয় শুণাগার।। হেন মতে নিৰ্ণি গেল, ভানু আসি প্ৰকাশিল, বুক্ষ হতে নানে সাত জন। আরোহিয়ে অস্থোপরি, চলে দবে সুরা করি: পশ্চাত্করিয়ে সেকানন।। হেন মতে কভ বন, ছাড়ি রাজ পুরুপণ, े हेमावर्ड (मर्ट्ग डेमनीड़। মরি কি দেশের শোভা, দেবতার মনোলোভা

হৰ সার পাবাবে ছাতত ।।

द्वित्त जान्त्र्या चन, मदन इत्त्र इच युट, प्रदर्भ मृद्य नगत अभिद्य । , मक्ति छेखम (शह, मानव नाहिक (कह, किङ्क विज्ञ ना शाब जाविद्य ॥ অপরণ দেখি ছেন, কহিতেছে মাত জন, কি আশ্চর্যা বিধির হজন। ना प्रतिथ ना लंभि काटन, कौव नाहि वामकारन, ভাবে মনে এ জার কেমন।। তবে সপ্ত নৃপসূত, দেখি দেশ এবভূত, সচকিতে চলিল নগরে। স্থুপের আগার যথা, উপনীত হয়ে তথা, প্রবেশিল পুরীর ভিতরে।। চারি দিকে যত হেরে. কে তাহাঁ বর্ণিতে পারে, মণি চুনি পরশ পাতর। খাদা দ্রবা নানা মত, দেখিতেছে অপ্রমিত, किछ काथा नाहि दिन्द थ नत ॥ পরে मश्च मर्ट्सम्दर्भ, मरन् मरन हिन्छ। कर् ্ তার পর পরস্পর কর। जारंग गार बार्ड र्रेन, उन्छ कानिय मर्दन, यक प्रक दाराव भागव म

শুনি দ্বিল স্বতনে, ক্ষে রাজপুতা গণে, রবে সবে হয়ে নাবধান। জানিলে এস্থাচার, আসি দুই দ্বোচার, নিশাচর চরে লবে প্রাণ।।

স্থ্রসেনের রাক্ষণ বধ ও ভাতৃগণের বিচ্ছেদ।

এত বলি সবে মেলি মন্ত্ৰং করিয়ে।
তদন্ত জানিতে রহে অন্তর হইরে।।
গোপনীর ছার এক দেখিতে পাইল।
রাজ পুত্রগর্ণ সেই পথে প্রবেশিল।।
তথায় দেখিল এক রমা সরোবর।
মনোহর পুজে দান তাহার উপর।।
যুতি জাতি মলিকা মালতী মনোহর।
চল্পক কদন্ত বক কিংসুক টগর।।
বেল সেকালিকা আদি গরা মনোরম।
বেল সেকালিকা আদি গরা মনোরম।
বেল সেকালিকা আদি গরা মনোরম।
বালিক ক্পরাজিতা চল্পক বক্রা।
মান ক্রেম মক্রজে ধার আলিকন।।

চন্দ্রমণি বৃহ্যমণি দেখিতে সুন্দর काक्षने पक्षने प्लाटन बृटकद्व छेलत ॥ সাল তাল ত্যাল হিন্তলি গাম্ভারী। पास जाम थेक दि भेगान माति गांति ॥ इंटानि यानक तक कि करत र्वन। পক্ষিপণ গান করে তাহে অমুক্ষণ।। ्रिनिरम स्ट्रेल स्थी मरतावत छान । नाना वटर्न ज्ञारन ज्ञारन श्रक्त करना।। ্যুত্ৰ মূভ কুছ কুছ ডাকে পিকগণ। मन्त्र मन्त्र शक्षत्रह वर्द्ध ख्यूक्ष ॥ বার মাস বাস তথা করে রভিণতি ! কান্তা সঙ্গে মনোরঙ্গে হুখে করে রতি॥ ं त्यहे जेमाद्मित्र मत्था वाधि व्यथ्नाय। পুরীর ভিতরে সূর্বে করিল গমন।। ट्न कोटन मिनीकत हटन अल्डाहटन त्म तक्तमी (महे इत्य विका मक्ता। প্রভাতে উঠিয়ে সবে করিল যুক্তি। धारे शादन किंदू मिन के देव देगी ।। निव कार्या वर तांका कतिएत समन कान हारन नाहि द्वित नगत्र अयन ।।

क्षक कम थाकि (इथा कड़र तकन। নগর ভাষিব হোবা ভাই হয় জন।। তবে সভাকার মত একই হইব। क् ब्रह्म्यः वनिः भवन्त्रेत कि**का**त्रिम ॥ भरत एवं कुमारतव कनिष्टे (व अन् ६ यत्व अहिनास यामि कतिएक तकन ॥ अनि पूर्ण देश इस दाजात मन्तर। धवादताची नेशदहरू कतिन गमन।। त्रानापि कशिद्य (क्या किंग्छे ने मूर्त । कर्वा कृषा रहा दश्य करने कार्याञ्चन । রস্বন প্রস্তুত করি অতি কুতৃ্≢লে। इन्छ श्रम भोज कदियादत यात्र कटन ॥ সরোবর তীরে বেই করিল গমন ! **७न ७क इम**्कात रेम्टवंत घटन ॥ रिकंप्रे जाकात अक ताकनी जाहेल। নিশানেতে বড় বৃদ্ধি হইতে লাগিল।। जन भूना उन जिनि छेन्द्र टाहाद । नाजन जेनाइ नगर मचक छेरात । गद्याप्त याणे हरेटच तालात कूमाता। দেবিল তাহায় ৰূপ বিকট আকার 4

গোপনীয় স্থান এক আছিল ভথার ! ভয়ে নৃপপুতা গিয়ে প্রবেশিল ডায় 🛚 দৃষ্টি করি চতুর্দিকে রাক্ষদী তথন। দেখে কত নানামত দ্ৰব্য আয়োজন 🛚 রাক্ষনী ভাবিছে হনে ইকি অসম্ব। थाना जया सिंध किन ना सिथ भानव। ু এত ভাবি গৃহদার সব অ**ন্থে**ষি**ল**। कान दारन किंदुई नक्षान ना मिलिल। বলে আজি বিধি বুরি হল রূপান্তি। সেই হেতু খাদ্য জব্য মেলে অপ্রমিত। এত বলি সমুদয় করিয়ে ভোজন ! ্করিলেক স্বস্থানে প্রস্থান সৈইক্ষণ॥ ত্তবে কিছু কণ পরে নিজ্ঞ নাইইডে। আইল নৃপের পুত্র স্থাবার পুরীতে। **मिथन ताकनी चाना कुटताइ जाहात।** সামান্য ৰূপেতে পাক করে পুনর্বার ॥ र्वेट्टाम्रह्मा अन ज्योक्त मह्दान्त्र । সাহার করিতে বসে ইরিব শন্তর। না হার্ক তৃপ্তি কারে করিতে ভোজনা শ্বাহ্য করিল সবে তাহার রঞ্জন।

७नि क्कू इटस भीत ना कहिल कथा। किन्नुहै ना विलिद्यन ब्राक्षभी वावडा ह পরে এরপেতে অনো করিল রন্ধন। পূর্ব্ব মত রাক্ষনী তা করিল ভোজন। क्टिक्रात त्राक्तभी द्वजाह ना नित्त । क्रटम इत्र मद्भारत मकान भारेता। এই মতে ছয় দিন হইল তথায়। मक्षेत्र क्रिक्टम इट्स मुद्रासम द्वास ।। স্মার সবে গেল পরে ভুমিতে নগরে। বিধির নির্ধান্ধ কথা শুন তার পরে !! স্থানাদি করিয়ে পাক করে মনোমত। বছ বিধ রস ভার নাম ক্ব ক্ত ।। **उपस्टात मर**तायरत ताकात नगर। হন্ত পদ খৌত হেডু করিল গমন 🛭 পুনর্কার পুরীমাজে আসি নৃপত্ত। বেড়ান অঙ্গন মধ্যে হয়ে হর্ষ যুত।। তদন্তর নিশাচরী আসি উত্তরিল। **८** इ.स. १५ वर्षे के इस्ते । বলে আজি মুপ্রভাত হইল বিমার। मरनाष्ट्रस्थं नत याश्य कतिव आशात ।

নিতা নিতা মোরে ভাত্তি থাক বুকাইয়ে। আৰি মোৱে বিধাতা দিলেন মিলাইয়ে। এত বলি ক্রভ ঢলি যায় ধরিবারে। তুমারের কিছু বাত্র ভয় নাহি তারে। বলে আজি সপ্ত দিন আছি বাস করি। এক দিন দেখি নাই এমন স্থবদুরী। अहे करमा अ मर्शदा माहि छानी लगा এছফী। হইতে নফ হয়েছে এদেশ। ভার সমূচিত শাস্তি দিব এই কণে। অচিরাত্ পাঠাইৰ শহন সদলে ৷ थाउ विधा महाराजी सुमक्त इहेल। নিশাচরী সঙ্গে ঘোর যুদ্ধ আর্ড্রিল। দ**ত্তে লন্ডে ম**হাবীঃ ধরি বা**ছ** বলে। সে নিশাচরীরে ধরি পাড়িল ভুতলে। তাহে রুদি সে রাক্ষ্মী কুমারে তথন ' ধরি করে ভূমিপরে করি**ল পতন** । कथन कुमात रूपि ताकनी कथन। ঘোর তর হয় রণ কে করে বর্ণন।। क्टिश काहि शादा प्रकटन मानद्र। সাতকে মাতকে যেন পর্বত উপর।।

এই ৰূপ মহা যুদ্ধ রাক্ষী ক্ষারে। বিস্তারিত দে সকল কে বণিতে গারে।। পরে ধীর ধরি শির করে মুষ্ট্যাহাত। শব্দ করি নিশাচরী হইল নিপাত।। হেরিয়ে হরিষ অতি হইয়ে কুমান। মত্ত পদ ধৌত করি এল পুনর্বার <u>৪</u> হেতা ছয় <u>ভাতা শব্দ গুনিয়ে অ</u>ব*ে*।। দে নগরী পাইছরি ভয়ে খেল বলে। ष्टिल मिनि मूटन सू**र्श्ने**ल नग । ভয় তালে নিশ্বাস হতাশ সহে ঘন ! বলে সবে ছুর্দুন্ট হেডু কন্ট কত। রাজ্য এই ধন নই অনিই সতত । একি দায় প্রাণ যায় উপায় কি করি। অকুল সাগরে ভাসি নাহি কুল তরি। এই মত রাজসুত গণ ভাবি পরে। **उभनी ७ ह्हे त्यान जेमग्र नगर**त ॥ তথা দেখে পুরী শোভা অভি মনোরম। সুরাসুরে তিন পুরে নাহি তার সম। **जन्छदत्र भीदत्र भीदत्र व्यद्यदम्म मगदत्** । কে পারে বর্ণিতে যত অন্তত ভিতরে 🛊

ভার পরে জমিয়ে স্থানে স্থানে ভাষার। দেখিল অপূর্ব্ব এক পুরী চমৎকার। ননে ভাবে হবে এই রাজার ভবন। হারেতে দেখি যে ঘন্টা অতি স্থাশেতন ঃ এসব দেখিয়ে ভবে সকল কুমার : স্বারপালগণে কিজাদিল সমাচার। শুনি দারিগণ কলে স্বিশেষ তার। সোম দত্ত নাম ভূপ এই পুরী তাঁর। ষ্ণী। যেই আছে ভার শুন বিবর্গ। রাজ কন্যা সকলের বিবাহ কারণ।। সপ্ত সংহাদর। তারা শরদের শশী। বিৰূপ সে সৰ হপে মেনকা উৰ্বাসী।। ধরাতলে নাহি আর তাঁদের সমান। স্থির নৌদামিনী প্রায় হয় অসুমান 🗓 সকলে সমান ৰূপ সমান আকার। কিছু মাল ভেদ নাই অতি চমৎকার।। বড় ছোট নির্ণয় করিবে বেই জন। নে ছয় কুমারী তারে করিবে বরণ !। হারিলে করিবে কারাবন্ধ নৃপমণি। এতে যাঁর ইচ্ছা হয় কর ঘণ্টা ধনি।।

রাজপুত্রগণ শুনি এ্যন রুক্তান্ত: ক্নাগেণ থেম আশ হইল একান্ত ॥ সেই দ্বারে আসি ক্ষেছর সংখ্যার । कदिल घन्छोद वर्ष नदम भारत्भारत ह यन्त्रे। त्रव धानरण खनित्य नत्रवातः। দুতেরে প্রেরণ কৈল আনিতে সবায়। দু হগে ডেড গতি **ভূ**পতি ভাজায় : উপনীত রাজপুর সকলে বথার 🖟 তদপ্তর ভূত্যগণ করি সম্প্রে। স্বার সভার লয়ে করিল গোচর।। স্তবোধ নূপতি অতি রাখিয়ে সক্ষান। সমাদরে স্বাকারে করিল আহ্বান ॥ পরিচর লয়ে পরে আহ্লানিত মনে। বদাইল যত্ন করি রত্ন সিংহাসনে 🛊 খাদ্য ক্রবা আনি পরে বিবিধ প্রকার। রাজপুত্রগণে স্থে করান আহার। ভার পরে সভাকারে করে নর্বায়। মম পণ বিবরণ শুন সমুদায়॥ विकाश किया मन बार्ट्स मुख करा। ছোট ৰড় চিনিলে পাইবে সেই জন।

না পারিলে কারাবন্ধ রাখিব ভাহারে। অন্তুমতি হয় যদি আনি সবাকারে :৷ এত শুনি কং ছয় রাজার কুমার। ছোট বড় চিনিব বিচিত্র কিবা তার।। একথা শুনিয়ে ভুক হয়ে নৃপমণি। मांभी व्यक्ति जास्त्रानिक जानिहरू निक्नि ॥ নানা খাভরণ অঞ্জেকরে কলমল: हत्रा सृश्वत किन नग्नत् कडाल ।। গৌর অন্দে নানা রক্তে করি দিল শোলা। দেখিতে স্তদ্ধরী হল জগমনোলোভা। স্থারেশ করিছে কন্যাপণ স্থীদান । সভা মাজে এল জিনি গজেন গমনে! দেখি এপ অপৰূপ ভাতা হয় তানে। চিত্তের পুত্তলী প্রায় দেখে কন্যাগণে।। চিনিতে অশক্ত হল জানিয়ে ভূপতি : কারাবন্ধ করিবারে **দিল** অনুমতি।। আজ্ঞ: পেয়ে ভৃত্যগণ লয়ে সবাকারে। यना यना वर्भाभटन ब्राट्थ काहाशादत । হেন মতে রছে তথা রাজপুত্রগণন পরে কুমারের কিছু শুন বিবরণ।

রাঞ্চনীরে করি নধ হরিও অন্থরে। স্থান করিবারে পুন গেল সরোবরে 🖁 'পুনর্কার পুরী মাজে আসি মৃপস্ত। থালা দ্রবা যত সব করিল এত্তে। लिया व्यवमान इहा भारत मरन भरन ! কিংহতু এখন না আইল আতুগণে 🛚 সদস্তর বহিদ্ব তির বাহির **হ**ইলো। করিল অনেক তত্ত্ব নগর ভামিয়ে 🖟 क्ति कार्या जिया बंख गामिनी बाहेल । मद्भाजकार श्रेमखात गृहरू अस्विमल । জালাগা বিচ্ছেদে কুমার ভাবে গনে। ব্যহার না হল তুপ্ত রহিল লয়নে। বহুমত বিলাপিয়ে কররে রোদন। বলে কেখা মোনে তাজি নেখে ভাতৃগণ ঈশার নির্বন্ধ কর্মা বুঝিয়ে তথ্য ৷ প্রবেধিল আপনি সে আপনার মন ঃ অনন্তর বিভাবরা প্রভাত হইল। ছুর্গা স্মরি রায় উঠিয়ে বসিল।। প্রাতঃক্রত্য যে কিছু করিল সমাধান। **उम्छत्र हिसा करत्र अक्श√विधान ॥**ं

ক্ষায় কাতর আছি করিয়ে আছার। যথা ইচ্ছা তথা ঘাব এই যুক্তি সার।। বিজ বলে ভাল যুক্তি রাজার নন্দন। চিক্ত স্থিয় কর কাষ্য হইবে সাধন।।

কুমারের ৰূপবৃতী কন্যা দশনে আসক্তি।

তবে ৰূপত্ৰত, অতি চিন্তায়ুত, ভাঙে ক্ধান্তিত, অধোনদৰে।

শেকে জরজন, হইয়ে অধর, ভাবে নিনন্তর,

षाथन भटन ।

বিষম আঘাত, করে করাথাত, গালে নিরে হাত.

বসিয়ে ভাবে।

চক্ষে বহে জল, অন্তরে অনল, र्हेल 🖄 वृत; .

ভাতা অভাবে।

অমূলা রতন, ভাই ছর জন, কোথায় গমন,

করিল হায়।

জানিয়াছি স্পান্ত, অনৃষ্ট অনিট, ডাই হেন, কৃই,
বিষয় দায় ঃ

এত তাবি বায়, না দেখি উপায়, চলিল বুরায়, म मरहानरहा।

দৈবের ঘটন,'শুন বিহবণ, স্মূল্য রতন.

(मर्थ महुद्र ह

 ७क ञ्चननी, जनम (माहिनी, कूतक नधुनी, অটেতে বসি।

करत धनी श्राम, कि कव वार्थाम, धम मीखियान, **डेनरा अभी** ।

ব্যাপি ত্রিভুবন, আছে যত জন, সদৃশ তেমন,

কৰি রমণী। কিবা সে স্থসভা, স্মতি নবা ভবা, নানা রস কাবা, ভানে সে ধনী।

গজেন্দ্র গামিনী,ভাষা হুধাজিনি, পিক গুনি ধনি,

वनि शामद्या

छेक्ट्र छेशमा, माति पिटल मैं।मा, तक्का एक ममा, কে বলে ভারে 1

क्या (मह वाला, भाष्ट्र हथना , इहेन हथना, नग्रम (रुज़ि।

े छात्र क्षेत्र माटक, कृष्ठम माटक, व्यक्त विद्रादक গোপন করি ৷

ছেরি চন্দ্রানন, ভাষি যে তপন, অতি ছঃগী মন, গগনোপরে।

নেত যুগ মীন, হৈরিরে হরিণ, ভাবে নিশি দিন, বন ভিতরে।।

নেখি ওষ্ঠাধর, বিষ ছংখান্তর, হইয়ে অস্তর. প্লায় লাজে।

অতি দঃথি মনে,নিন্দিয়ে আপনে,পশিল গোপনে অর্ণ্য মাজে ।

কিবা দন্ত যুভা, হেবিয়ে মুকু হা, রত্নাকর বধা. তথা প্রবেশে বু

রত্ব পেল যবে, তাহার প্রভাগের, রত্তাকর তবে, নাম প্রকাশেয়া

পদের বর্ণনা, কে করে বলনা, না পাই ভুলনা, তিন ভবনে।

দেখিলে সৈ পদ, যায় হে বিশ্বদ, কামের সম্পদ.
দেখি সে খনে।।

নিষ্কন্টকে তার, কণ্ঠে কণ্ঠ হার; অতি শোভাক্ষার, কুচ' উপরে।

ভার গাত্র গাত্র, পাইয়ে আনক, নদাকিরে ধদু, অবি চকোরে॥ দেখি সেই ৰূপ, কাম রুপকুপ, সে নাগর ভূপ। বিৰূপ হল।

শারদের শাশী, ভূতলেতে থসি, কিয়া অংশ মিশি:-জনম নিলা।

তানে রাজস্বত, হয়ে হ্রষিত, শৌক হল শত.

कारमत बदल।

ক্ষুধা গেল দুরে, প্রেম স্থথা হেরে, চলে ধীরে ধীরে. রমণী পাশে।।

भक्ष পেষে धनी, मत्म खब्र গণি, পশিশ खन्ननि, क्षीत्रन मार्ट्य।

জীবনে পশিরে, ছুখ কিরাইয়ে, দেরুপ হেরিছে। পঢ়িল লাজে।

निधित्त्र नावना, विटन धना धना, भृता कवि भृतः, आर्टन भनी।

किवा मूथे (भाञा, महिकिवा खंडा ब्रेडि महमारणांडा, स्टब (म मागु)॥

কামের কামান, করিয়ে সন্ধান, বধিবারে প্রাণ, এজন এল।

ও শেল সন্ধানে, না বাঁচি বা প্রাণে, মরি মনাগুনে, কি করি বল ॥ মদন কালায়, মরম গলায়, কিসে রাখা বার, একুল মান।

যদি এরে পাই, তবে দে জুড়াই, নতুবা রুধাই, এছার প্রাণ।।

अबल प्रवित्स, मन्तरक छावित्स, श्रेयम् शिनित्सः कृष्टिष्ट् धर्मी।

কে তুমি হেডায়, কহ রসময়, নিজ পরিচয়, বল হে শুনি।

८ विकासित, मा १८व मानव, मटनएउ मस्रव,

হয় ভোমারে।

কিবা মান্না করি, এলে এই পূরী, বল সভ্য করি ভূমি অংম রে।।

কিবা তব নাম, কোথা তব ধাম, ওহে গুণধাম. মিথ্যানা কবে।

আমি হে জবলা,তাহে কুলবালা,মোরে করি ছল. কি লাভ হবে।।

षिक वर्ता श्वन, र्क्स ता अमन, मिन श्र मनन, इहेरह जांव ।

বে জন বেমন, মিলয়ে তেমন, বিধির ঘটন, মিলন তর ॥

কুমার কপবতী উভয়ের পরিচয়।

নরেশ নন্দন শুনি এতেক বচন ৷ মৃত্যু হাসি মিণ্ট ভাষি কহিছে তথ্ন। শুন হ্বদনি ধনি কিছু নাহি ভয়। 'দেবতা দানব নহি শুন পারিচয়।। क्रमुंबी**रश वश्रतारका काक्षन नगत**। শ্রেষ্ঠ তম অন্তুপুস খ্যাত চরাচর।। সভাগতি নামে বাজ। তথায় বসতি। धन धाना পরিপূর্ম ধর্মশীল অভি।: खन क्षार्थ कर्म त्यार्थ समृता गठन। তুই ভার্যা নূপতির সপ্তম নন্দন।। কনিষ্ঠা পক্ষেতে স্থত আমি রসবতি। **সুর্দেন বলি নাম রাহিল ভূপতি।** এক দিন মূলয়ার গিয়ে পিতৃ সলে। আশ্রুষ্য হেরিয়ে আসি ভাই সাত জনে। সবারে পাঠান পিতা তার অস্বেষ্ণে। বহু স্থানে ভ্রমি পরে আসি এ ভবনে 🛚

ক্রমে ভামে নগরেতে করিয়ে ভ্রমণ। প্রাণী মাত্র কোম স্থানে না পাই দর্শন 🖟 দেখিঃর অন্ত্র কাণ্ড না বুরিয়ে অন্ত। সপ্ত সহোদরে রহি জানিতে ভদস্ত। নিয়ম করিয়ে মোরা ফিরি ছয় জনে। এক জন থাকে মাত্র বন্ধন কারণে ॥ এইবপে ছয় দিন অতীত হইল। অবশেষে মোর পালা কালি কয়েছিল। ভামায় রাখিয়ে তাঁরা ছয় সংহাদরে। অশ্বাক্টে গেল সবে ভারিতে নগরে ॥ পরে আমি খানা দ্রবা কুরি আরোজন। रहन काटन अन अक टेर्न्ट्रवंत घडेन k এল এক নিশাচরী বেগে অভিশয়। দীর্ঘাকার কলেবর দেখি ভর হয় 🛭 মেষের সদৃশ তার গভীর গর্জন। ' আইল আমারে পরে করিতে ভক্ষণ ॥ তার পরে মোর সনে হল ঘোর রণ! রণে পশি সে রাক্ষসী হইল পতন। তদন্তরে মোর সেই ভাই ছয় জন। কোন স্থানে গেল তার না জানি কারণ ।।

(महे ह्यू विद्यार्थत इहेत्य मधन। न्नान ८३ ज्ञाभि करन इड्रेश वियम ॥ পরেডে ভোমারে হেরে গেল সেই দুখা रिट्याय द्याकृत हिन्छ इस्टात उन मूर्थ ।। বর্ণনা অতীত তব ও বিধু বয়ান। কাননে কুরজী করে কটাকে প্রান। মৃদ্রে আমার আজি আনন্দ না ধরে। মনেৰ মনেতে মাত্ৰ মিলৰ সভুৱে 🛊 कि नाम यहरू जूमि वन स्वक्रिन। কোণায় বসক্লিতৰ কাহার নন্দিনি। काहात अपरा गांति विष्ट्रपत भूल। এসেছ এখানে ভূমি করিয়ে আকুল। দেবকন্যা হবে ভূমি হেন লয় মনে। মোরে হেরি ছীমতে পশিকে কি কারণে।। প্রাণী মাত্র নাহি হেতা শ্মশান বেমন। নারী হয়ে এলে ভূমি করি'য় কেমন 🛭 বিতারিয়ে সে সকল কছ স্থামুখি। শুনিলে তোনার বাক্য হই তবে সুখী। ধনী বলে শুন ওহে রাজার কুমার। মম পরিচয় কথা কহিব বিস্তার 📭

ছেল। ইলাবর্দ্ধ নামে ছিলেন রাজন। धन थाना शूर्व माना विशाफ जुवन॥ এক রাণী ছিল ভার নাম প্রভাবতী। অতি সতাঁ গুণবতী পতিপ্রিয়া অতি।। তার গড়ে জন্ম মম নাম ৰূপ্ৰতী। বিধির বিধিতে ছেন হইল চুগতি। বেই নিশাচরী ভুমি করেছ সংহার। সেই চুটা হলে এই রাজ্য ছারখার ম এদৈশে বসতি করি ছিল ষত জন। দীব মাত্র ছিল যত করেছে ভক্ষণ।। रमादद पिखादत क्रुकी यथन जाईन। कीदरन श्रामारश सम कीवन दक्षि ॥ দেবীর কুপায় পাই জীবনে আলয়। ভয়যুক্ত হয়ে তথা বঞ্চি রসময় 🛭 ভোমার কারণে নিত্য পূজি ত্রিলোচনী। আজি তা সফল হল আইলে আপনি। নারীর জীবন বৃথা পতি নাহি বার। অনঙ্গেতে অঙ্গ ছবে করিয়ে প্রহার। এইতে। উদ্যান আর কোক্লের স্বরে। ভালির ঝকারে যেন শর হানে **স্থা**রে।

অবলা পাইয়ে একা বসত্তের সেনা একত इहेट्स यद्ध नाहि शुरन भाना ह .কলেতে নিবায় অ্যি শান্তের লিখন। ফলে থেকে আয়ো ছলে একি জন্তটন। বুঝিল ম অনল সে জলেতে নিবায় ? **८८ भागम भिलन दिह**्न साहि गांश । এত হলি নিকটেতে এল ৰপরাশি। নাগরের গলে দিতে পিরীতের ফাঁসি।। রামারে *নেখিয়েনুপ* স্তুভ হর্ষিত। क्षांट्र क्षांहाकात । अदम हरेन वाधि । কুমার পরনানদে কহে কন্যা প্রতি। শুন শুন প্রাণ্জিয়ে স্থামার মিন্তি।। महम इटल्ट्ड रमह कुःथं मोवानत्ल। আজিতা শীতল কর তব প্রেম জলে। কি করি মনেতে সানা না মানে কিঞ্জিত। এর চেষ্টা কর প্রিয়ে যে হয় উচিত। जनस्र विवृश्यी विरञात स्हेरतः ! বিশেষ বাাকুল হল মন্মথে মাভিয়ে। বুঝিল নাগর মম উপযুক্ত বটে। বিজ কহে ব্ৰহ্ম.ন প্ৰজন আসি ঘটে 🔢

কপবতী কুমারে গান্ধর্ব বিবাহ।

ভবে নাগরের মন, কটাকে করি হর্ণ, লয়ে চলে বাজার ভবনে! ফরেতে ধরিয়ে কর, করি বহু সমাদর, বদায় বতন সিংহাসনে।। তদন্তর উদ্যানেতে, গিয়ে অতি পু**লকেতে**, লানা পুষ্পা করে আহরণ। গাঁথিল অপূর্ব হার, তুলনা নাহিক ভার, भूक्ष इस प्रशिक्त भूमन ! রসিকা রসিকে কড, সাজাইল মনোমত, মনোরথ করিতে নির্বাহ। লক্ষা ভর পরিহরি, নানা পরিহাস করি, করিবারে গান্ধর্ব বিবাহ 🛊 उम्झत नृशमुख, मतन इत्त इच्यूछ, ভাবে কভক্ষণে হবে নিশি। विधि कि ममस इंद्वः मिवाकत मृदत्र बाद्यः, শীতল করিবে আনি শশী॥

ভাবিতে চিস্তিতে পরে, দিধাকর গেল দূরে, নিশি আলি দিল দরশন। , द्रशक्त निज श्रोन, कतिलक नै। श्रिमान, দেখি দোঁছে হর্ষত মন। यत्ना कुर्य धनी भरत, शृष्ट्र,याना नरम करत, নাগরের গলে পরাইল। ভাকে ছয়ে হ্রবিভ, র্ষিক রুদে মোহিভ, তাবি এক মাল্য করে নিল।। क्षिय़ शरल मर्याधन, यम्**रन** यस्न मिन, श्विश्वदेश **डि**ळ शंखवाला । हिंदिक वनम छैल, मिटन शिन है। दन हैं। मू অন্তঃ ত্রলিল কাম তাল।।। মতু হল রমরাজ, সাধিতে আপন কাজ, र्हेलन हक्ष्म चयुत्र। হ্রে অতি ব্যগ্র মতি, যাচ্ঞা করেন রতি, রশবতী কচে ক্ষমা কর !৷ আছেতো যামিনী নাথ, কেন হেন অকস্মাত্, অঞ্ভব শরের মহায়। পরশে আমার প্রাণ, হয় এই অমুমান,

मति दुवि भनन चालाश ॥

একে সন্তাপেতে মরি, নাহি নিবারিতে পারি, কত সব অবলা সরলা। দিক বলে নাহি বাদ, সাধ দোঁতে মনোয়াদ, নিবারণ হবে সব তালা।।

রতি ক্রিয়া। তবে নৃপস্কুত, সৰনে পীড়িত, धतिल कामिनी शतल । क्रमात वर्षात्, यसम प्रशिवा, বসন হরিল ছাল । कृष्ठ गुर्ग करत, धतिएः निरुद्ध, ক্ষিছে করুণা বাণী। मा कामि त्रमण, एट्ट खाल धन, ক্ষহ নগ্ৰ মণি 🛭 উতলা इंहेर्य, कनिका पनिर्य, रल कि इहरव वैधू। ফুটিলে সে কলি, ভবে আদি আলি, পিরে দে ফু:লর মধু!! কেমন সাহদে, এনব বয়সে, रानिएव कारमञ्ज्ञानंत ।

ওকে রাবরায়, ধরি তব পার, আছি মোৰে ক্ৰাকর ॥ श्वनित्य मार्गव, तत्त्रव मानव, करिएइ मुल्ली अणि। भट्ट मा याजना, कि कृति दशना, প্রিয়ে দান কর রতি। ত্যজিলে সে ভয়, ছইবে নিৰ্ভয়, ভাব ছে কেন প্রলয় । ত্যঞ্জি হৃদি বাস, পূর্ণ কর আশ, বাজি নাছি প্রাণে সয়। এতেক বলিয়ে, সহলে ছলিয়ে, क्रमत्म शिमिल प्राक्षि। मर्टन मर्टन, ज़्लि निल क्रांटन, ध्रतिया कमल कलि।। 'ভবে রসবতী, কাজে দিল মতি, नाटक क्षिट्ट तकत्ता ফুটি প্রেমকলি, উঠিল উথলি, কাম বন তাহে ভাসে 🖠

স্থরসেনের শুকপক্ষী অশ্বেষণে গমনোদ্যোগ।

এই कटन माध्य माध्ये ग्रह जन। निङ्ग नवंद्राम करत तक्षमी वक्षम । দোহাকার প্রেমরদে তুজনে মোহিত। নানা মত করে কেলি ধরে হাট চিত। किছू मिन शद्य बुख नद्यमं नम्म । বলে শুন প্রাণপ্রিয়ে আমার বচন।। ख्द क्षावादित किं हु मा आति विदर्भ। মম প্রয়োজন আরু আছুরে বিশেষ।। এক দিন পিড় সহ যাইয়ে কাননে। অপৰপ পক্ষী এক হৈরি ভাতৃগণে। ননোহর গুক্বর অপূর্বে গঠন। সুচিত্র বিচিত্র তার অঙ্গের শোভন । ধরিবারে ইচ্ছা ড়ারে করিনে রাজন। ধীরে ধীরে:খান পরে তাহার সদন। দেখি শুকু মনোছখ দিয়ে সেইক্ষণ। অস্বেথিলে পাবে ৰলি করিল গমন।।

শুনিয়ে এমন বাণী পক্ষীর বদনে। চিন্তার চিন্তিত ভূপ ভাবি মনে মনে ৷ ভাহাতে উদাস্প্রড় দেখিয়ে রাজনে ! পর্যার উদ্দেশে আদি ভাই দাত জনে।। পরে ভারা সঙ্গী ছাড়া হয়ে কোথা গেল আখার ক্রটের মারি বিরক্তের শেল !! নে শোক হইল দূর ভোমার মিলনে। जफरन रम त्थम खिटा विस्म विस्ता। থখন এলেছি আমি তাহার সন্ধানে। যথায় উদ্দেশ পাব যাব সেই স্থানে।। ইহাতে যদ্যপি হয় পতন শরীর। তবু না ভাবিব কফ এই যুক্তি ছির ॥ যদি কিছ জান প্রিয়ে তালার সন্ধান। কং দেখি বিধুমুখি মম বিদ্যমান।। এত শুনি শিহরিয়ে কর্ণে দিয়ে হাত ! वत्न अकि निमाक्षण वक आगनाथ।। জানি সে পক্ষীর কথা বড়ই ত্রন্ধর। নহেতে। তোমার সাধ্য পথ ভয়কর ॥ -হিঙ্গলাটে গুভাঙ্গদ নামে নৃপমণি। সনোরমা কনা। ভার নাম স্থরক্রিণী॥

সৌদামিনী িনি তার ৰূপের যাখান ৷ শুনি ৰূপ সুরামুরে হয় হতজান। শুনেছি দুষ্কর তার বিনাহের পর। वृक्षित्व अभिक भारत कवित्व वहन । শুনি যত নৃপস্কুত হয়ে অভিলাবী। গিয়ে না পাইয়ে তারে হয়েছে সন্যাসী " তার কাছে আছে সেই শুক মনোহর ! . **কেমনে পাইতে** ভারে বল গুণকের। যদি কোন মতে তথা দেখা পাও তার . না **হইবে কার্য্য সিদ্ধি প**রি**শ্রম সা**র 🛭 হেন কাজে কেন তথা যাবে ওচে প্রাণ। আমার ক্রুছে মারি বিজেদের বাণ্ !! **শুনি নুপত্নত কয় বাব ভথাকা**রে। ভাগো ৰাহা আছে ভাহা কে খণ্ডিতে পারে। তুমিতে। অ্বলা বালা না জান কারণ্। নিরাশ্রে আশ্রম জাপনি নারায়ণ।। অভএব প্রিয়ে মোরে কর হে বিদার। ছিল বলে শীঘ্ৰ চল বিলয় না সয়॥

স্কুরসেনের কাননে কালিকার সিদ্ধানন্ত প্রাপ্তি।

ভরত্তর মৃপঞ্ত, ভাবি মনে নানা নত, मार्थ कः मिनीत धंत करता। राम अन धानिवास, मानाड अमृह्म इत्स. कत रमार्ट निमान सहरते। স্থত ব্যাদাধিরে পটে, আর্মির ভোমার পুরে, চিন্তা কিছু না করিছ মনে। जूमि यपि इंख वाम, ना शृंतदव मनकाम, যদি মিলে সে ভোমার প্রশে 🛭 এত শুনি রসবতী, হয়ে অভি ম্লানয়তি, নয়নে বহিছে বারি ধারা । ' নলে শুন প্রাণকান্ত, যদি হে যাবে একান্ত, নিতাম হইব প্রাণে সারা !! কেমনে জীবন ধরি, তোমারে বিদায় করি, যদি স্থা ত্যজিয়ে যাইরে। দাসীয়ে রেখ স্মরণ, না করিব নিবারণ,

তাহে তব অশুভ হইবে॥

এতেক বিলাপ পরে, দিদায় করি নাগরেন াট্নানলে কভের জাবন। দৃপস্তুত তদন্তরে, এবোধিয়ে প্রেয়দীবে, অস্থাৰতে কবিল প্ৰমন !! विश्व थार्याक्षन चार्ष, अभ नामः काल कार्यः অবশেৰে প্ৰেশে কানন ছেরে রুফ অগণন, ফল জুলে সুশোচন, বসি তথা ভাতে পিক্লণ ৷৷ ্তৰে জ্বেষ্ট্ৰৱাজ, নিৰিছ অৱশ্য মাজ, প্রবেশিয়ে পার্গিল ভাষিতে। ভাতে পাশ্বরণ সাম, করে ভয়সর রব, যুহা ভয়ে ন। পায়ে চলিতে।। ভাবিয়ে চিন্তিরে পরে: দৃটি করি কিছু দূরে: 'त्राथ এक जान्हरी वाशित । পুরি এক স্থনিখিত, চতুর্দ্দিগে স্থনোভিত, বর্ণিয়ে কি শোভা কর ভার।। ভথা গিয়ে উন্ধরিয়ে, পুরি মধ্যে প্রবেশিয়ে, দেখে তিলোচনা শ্বাসনা। 🖊 पू उपानी उग्नक्षी, व्यामधाति मिशवती,

অনৰপা গহাস্য বদনা।।

ভক্তি ভাবে তদম্বনে, লোড় করি ছটি কবে, প্রণমিল দেবীর চরবে। হরিষেতে পূজা করে, স্তব আর্ড্রিল পরে মন লাশা প্রথম করেছে।

দেবার ভব।

নমতে জগতমাতা কালি কদ্যিনি! करें। कि कबून साम जुटन व किस ॥ एक् व्यंत्रमधी कडि शि। भीमिकिश। धनारमः जाहारमः मिर्दा कालक्ष्यशिन । ননতে ভূদার হত্তি ত্রিপুণধারিণি। সর্বাহটে শক্তি আলে। ভূবন হাংগিনি 🖠 रें के के मुक्ति मार्ज । कुलकु इ.सि.न। মনল বিধাতী জগদোতী নিস্তারিণি।। प्रोरिता भार्या भहादिरमा डाउन्द्र जनि । জর যুক্ত কর ভার। ঈশান গৃহিণি । তব তত্ত্বভানি মনে ভব নিস্তারিণি। নিগুর্ণেরে ক্র রূপ। মহেশ্যোহিনি।। অনি মা চোমার দাস কিছু নাই জানি। তপ ৰূপ তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ তুমি গো ঈশানি।।

এরপে করিয়ে স্তৃতি লোটায় ধরণী। रम्भन् (मधि जुन्हे। खन्न क्रमरी 🎚 ভক্ত বংশলা মাতা তাপৈত তারিণী। কিবা ভক্তাধীনা দেবী ভকত পালিনী । ভব জায়া ভক্ত প্রতি হয়ে রুপারান। নৃপত্ততে সিদ্ধ নত্ত করিলেন দান।। বলিলেন এই মন্ত্র করিয়ে পঠন : यथे। रेष्ट्रा यादव त्कर ना शादव नर्भन ।। আর তব বাঞ্জিত যা আছে প্রয়োজন। ম্ম বরে দিখা তব্ হইবে মনন 🛚 এমত শুনিরে ভূষ্ট নরেশ নক্তর। এক মনে প্রণমিল দেবীর চরণ।। স্টি স্থিতি প্রলয়কারিণী তুমি শিবে। নিজ গুণে দীন বিজে,বাঞা প্রাইবে।

কুমারের হিঙ্গলাট নগরে উপনীত।

নৃপস্থত তদন্তর, তথা হতে শীভ্র তর, বহিতু তি হইয়ে তথন।

মহানদে যায় চলি, হয়ে অভি কুভূহলী नाना द्वान क्रिया अग्रा **ংহন মতে সে** জালন, ছাজি নুগতি নৰ্ণ, চতুস্পাশ্ব দেখে নেহারিয়ে। কত দুরে দুট্ট হয়, তপন কিরণ প্রায়, দেখি তায় চলিল খাইয়ে '। रगटक रपटक करत माना, महन महन विस्पर्वताः जेन्द्र भवन एरे १८४। কিষা হেন খনে লয়, হবে কোন দেৱালয়. বুঝা যায় জ্যোতির প্রভাবে ॥ নিক্টস্ত্লেপর, দেখে অপূর্যে নগর, বিচিত্র নিশ্মিত রাজ ধাম। হেরি বিমোহিত চিতে, প্রবেশিয়ে স্বরাহিতে, হেরে শোভা অভি অনুপান।। आंচोरब्रट हार्बि जिल्. ८४ नगत अ्ट्विकेड, চারি দার তাহাতে শোভন। পুজ্পোদ্যান তরুগণ, স্থানে স্তানে স্কুম্পেডন क्षि इस मन छेडा हेन ना মল্লিকা মালভী জাতি, দেখিতে সুক্তর খতি.

চম্পক গোলাগ শোদ্ধা পায়।

আনন্দ -বিলাস।

তমাল হিস্তাল তাল, আয় ভাম সুরুবাল, ত হৈ বসি পাফী গাম গায়।। কৈছু দুৱে মরেবের, দেখে স্বভি মনোহন, কাঞ্চলে সোপান হল ভার। নানা জাতি পু পাত মু, দেখে মাতি শোভা গায়. क्तिन(मोहिन देश राज ।। क्रमम च्यान्हर्य ८६८व. घट्यम म म्या श्रह्म, ভার মধ্যে ক্রিয়ে জবেশ। कृषकि मगत नाम. जानिदारव **ख**नशाम. প্রজাগতে কিন্দুলেস বিধের ॥ শুনি প্রজ্ঞান ক্ষা, শুন ওচ্ছে মহাশর, কহি জন প্ৰি প্ৰতিধ্ন . विक्रमा है : एम न्यार, कुछाज़न गत्नाथ, প্রভাবেপতে শ্যান স্মান । সবে এক ক্রা ভার, কপ অভি চমংকার, বৃদ্ধি এক বৃতি ভার কাছে। সে কন্যা ঘরপ আর, রূপ কি আছুয়ে করি, ত্রিলগত মধ্যে যক্ত আছে ॥ এসব বিকান্ত শুনি, আনন্দিত গুণমণি, অবুলে পাইল কুলতরে।

ত্বরা করি ম্বরাজ, চলিল নগর মাজ, অশা রাখি অভি থিরি থিরি। দেখিছে নগর শোভা, দেবতার মনোলোভা, গৃহভার কাঞ্চনে রচিয়া

মধ্যেতে চাঁদনী চক, করিতেছে ঝক মক, প্রস্তার প্রবালে সুখচিত।

বালাখানা পরে কত, নহতত শত শত.

মরি কিবা হতেছে আওয়াজ। নুপতি নগর মাজে, সেনাগণ নানা নাজে,

দয়ে সন্দে করিছে কাওয়াজ।। এমতে বাজিছে নানা, মূনস পিনাক বীণা-

সওস্থার বাজে সপ্তসর।।

কে বৰ্ণিতে পারে কভ, বাজে বাদ্য কত মত,

পাংগমার কিবা মনোহরা।। দো. য়ে ৰগর শোভা, মণিকাঞ্নের শ্রভা,

• প্রশংসা করিল বছতর ৷

সম্মুখে দেখিল কিবা, সরোবর মনোলোভা, সোগানেতে বঁখা মনোক্রা

गित्रवादत शुष्त्रा । । , दिवादत सुर्गाखन, शक्त दर्द मनग्रा श्रदन ।

শ্বেত রক্ত নীল পীত, কত পুষ্প প্রক্ষাটত, দ্রাণ প্রাণ্ডের মদনে।। স্থাকুল হইয়ে প্রাণ্ডে ব্যালেন সেই স্থানে, মনোমধ্যে এইংগ ভাবিত। ভারু অস্তাচলে বাহ, দামিনা আগত প্রায় বানা হেতু বিশেষ চিস্তিত।। एम कारल खन वाशी, अन अक शाशामिनी-নাম তার কেতকা কুন্দরী। षास्त्रं क वर्षत्र १७, एवं के हि नान अल, रामा भूथ इशाह जर्दी ।। দেরি কুমারের রূপ, বলে এ কি অপরূপ, धमन वा एहति दक्ति एएए । যদি করে বালে বংগা, ভলে পূতে মন আশা, महानतमः नत्य गारे वात्म ॥ এড বলি হেগে হেনে, জিজানে কুমারে এসে. কেবা ভূমি কোথা ভাগমন। আছ কোথা বাসা করি, বল মোরে সত্য করি ৰিস্তারিত তৰ দ্বিবরণ।। धाठ छनि नृशस्त्रः, मरन हर्द्धं श्रूविक्ड, ं बतल अन विकाप करें।

দেশ পর্যাটন ভরে, আইলাম এনগরে,
ভত্ত্ব করি বাসা পাই কই।।
শুনি গোপী পুন কয়, শুন শুন মহাশয়,
আমি অভি জ্ংথী গোয়া লনী।
ছত্ত্ব বেচি রাজবাদে, সবে মোরে ভালব সে.

নিজ বাসে থাকি একাকিনী। ঘূণা যদি নাহি হয়, এস তবে নমালয়, বাসা দিয়ে রাখিব ততনে। বখন যা চাবে তুমি, মিলাইয়ে দিব **আমি,**

সাধ্য মম অসাধ্য সাধনে।
রায় ভাবে ভাল হল, কালী মোরে মিলাইল,
ইহা হতে পাইব উদ্দেশ।
স্থালে শুনিতে পাব, ভূপের তদ্ম সব,

বিশেষ পক্ষীর সবিশেষ ।

এই যুক্তি করি সার, কহে নরেশ কুমার,

তুমি মম মার সম মানী।

ভিজ বলে সত্য বাণী, দাহ সঙ্গে শুণমান,

मिलं लान मानी कि हिलानी।

কেতকীর নিবা**দে কুমারে**র গম্ন।

তলশ্বর চুর্গা বলি চলিল ত্বরিত ! ... পোয়ালিনী বাদে আসি হল উপনীত : वाष्ट्रिय जेखर १० (क स्की रामाती । कुमाद्र हाथिन नहां च उ यह कहि 🗈 भानि दिल यात बात माना छेशहात । छो**ङ**नारम **७**हेरनम तालात कुमात । প্রভাত কালেতে উঠি অরি ভগবান। প্রাতঃ রুড়া যে কিছু করিল সমাধান ; মধ্যকৈতে লান পূজা করি নিয়মিত : রক্ষন ভোজন আদি করিল ত্ববিভ ৷ উত্তম শ্বামে পরে করিলে শ্রন। 🔭 মনে মনে চিন্তা করে নিজ প্রয়োজন।। কি মতে পাইৰ আমি সেই পক্ষিৰৱে। নানা ভাবে ভাবি ভাব অমুভব করে॥ মাসী বলি কেডকারে ডাকিল তথন। আজ্ঞ মাত্র এল গোপী কুমার সদম॥

রায় হাসি বলে মাসি শুন্হ বচন। শুলিবারে ইন্ছা এই দেশ বিবর্ণ চ রীজার চরিত্র কিবা কহু না মানারে : কি মত প্রভাব তাঁন ইচ্ছা শুনিবারে॥ चना। পুত্র কয় ছাং কিবা নাম চার। বিভারিরে কহু দে সকল সমাচার। নেতকী হাসিয়ে বলে শুন হে সুজন। বড়ই এড:প ৰড় পণ্ডিও রাজন !৷ পুতাধীন নরপতি কন্যা এক জন। অপরপ কণ তার অতি ভ্লকণ।। প্রধানশ ব্য ক্লেবরঃক্রেম তার । বিস্কের কারণ রাজা ভাবে অনিবার।। কল দেশ হাতে এল বাজার নকন। कृष्ट उद्यादन ए। भवादन मा देवन वदन ॥ কি জানি কি মত তার বুকি:ত না পারি। নাহিক কপালে বিয়ে অন্তঃত্র করি॥ রসিকা রমণী বড় এই ভার পণ্। 🐪 👵 যে হবে র্যাক ভাবে করিবে বর্ণ 🛊 ু ভূমি ৰূপবান বট শাল্কেতে নিপুণ। देश विष भार वृक्षि करत खब शह ॥

যদি বল বলি গিয়ে রাজার সদন।
কুমার বলিল মাসী কিবা প্রয়োজন।
না জানি তাহার গুণ কি মত হইবে।
বুঝিতে পারিলে করি পরিশ্রম তবে।
সাড়া দিয়ে সাড়া যেন পার গৃহত্তর।
পারি কি না পারি আগে পাই তার তের॥
এতাশুনি কেতকী তাহতে দিল সায়।
দিক রূপ। বলে দিক সুগার্দ গায়।

কুন)রের রাজ ভবনে কেতকীর সঙ্গে গমন।

ভাবে রায় ভদন্তরে, কেমনে পাইব ভারে,
মনে মনে করে বিবেচনা।
হয় প্রাণেতে আকুল, নাহি পায় কোন কুল,
বিদি নানা করয়ে ভাবনা॥
না হেলে মদন বাণে, দগ্ধ করে মম প্রাণে,
কি করিব ইহার উপায়।
বুঝি বিধি নিজ করে, গঠিল সে প্রেয়দীরে,
ভেদিবারে আমার ক্ষরঃ।

कर्ण करने हात्र कात्र, धना कि घटिन मात्र. আসিয়াছি শুক পর্ফা তরে। নাহি পাই ভার টের, হইল বিশ্ম কের, মনোজঃখ কৃষ্টিৰ ক হোৱে !! रम ब्रुथ नहीं भाषात, स्कार करेंग भात, क्ति इदब मा त्यांथ ता डेशास । পাব কি না পাষ তারে, ইচ্ছা হয় দেখিবারে, ভারে মনে নরেশ ওলয়।। ट्र कारन आसिनी मन्त्र काने हट धनी, ছুগ্ধ দিতে ভূগের ভবনে। তা দেখি নাগর রায়, চিন্তায় চিন্তিত কার, বলে যাৰ কেমন বিধানে।। বীধির বিধির বশ্বে, যাইতে স্থক্তরী পানে, দিক্ষ মত্র হইল স্থরণ। यद्वेत अভाव कना, रमिश्टल ना शाय व्यना, পুলকিত কুমার তথন ॥ চলিল কেতকী সঙ্গে, আপনার মনোরকে, ं बरन जानि बर्ह्मारमाहिनी। पीन विकारिक मात्र, याहः सारू मृ**णालकः**,

ाक्ष्या भारत नहत्रमामकिमी ।। 🖔 🧸

कुमादित मृश करा। पर्भन।

ত্রলিল কুমার ভবে কেডকীর দক্ষে। নং পার দেখিতে কেই মন্তের তরজে।। উপনীত রাজ বানে কেতকী স্থন্দরী 🗁 কুমার সধ্যের বড় দেখি রাজপুরী 🕕 **कृत्यित ७४न त्यांका जुनन त्याह्न** । দুটি মাত রূপস্ত বিমে।হিত মন।। জুগ্ধ দিতে কেতকী গেলেন রাণী কাছে : মনো রঞ্জে চলে রার তার পাছে পাছে !: এই মতে স্বাক্ত্তে ভবন দেখিল। রাজ নন্দিনীর পালে শেষেতে চলিল।। রব্ধ পালক্ষেতে তথা মন্মথমোহিনী। সখীগণ বিদায়ে দিতেছে শিরে বেণী।। ত একেত ৰপনী তাহে বয়ন যোড়শী।' ৰূপছটা দেখি মান হয় তার শশী।। . অধিক কি কব ৰূপ ভূবনমোহিনী। ाणि जनस्मत्रः चाटफ न्यूकारः माभिनी ॥ কপদীর ছেন ৰূপ কুমার ছেরিয়ে। ্তর্ক করি নানা সত না পার ভাবিয়ে।

ভবেতে: কুমার মনে ভাবিরে উপায়: হৃতিত ভড়িত প্রায় আইল বাসায়।। প্রেত্ত কেওক। রঙ্গে নানা বক্ষা করি। উপনীত ধনী পাত্ৰপ গমনেতে করী ॥ । लंदक विवृधिनी ए। दस वसक छेन्द्र । 'মন্ত্ৰ অনিল আগৰ ৰহিছে তপায় গ পিকাণ কুহস্বরে করিতেছে গান: শুনি মেই ধনি উড়ে ধনীর পরাণ ৷: বিষম ছালার বাস্ত নিশি দিন প্রাণী। कुश भारत छारव वर्गि सृत्भात सन्मिनी ॥ ইতি মধ্যে উত্তরিল কেতকী আসিয়ে। কি কর নাভিনি ব'ল সম্ভাবিল গিয়ে।। আয় বলি স্থরসিনী সম্ভাষিত্র তারে। বলে তব স্নেছলেশ মাহি মাতিমীরে।। শাপন আপন করি ভারি যার ভরে। সে জন আপন করি না জানে অন্তবে।। প্রেমাসজিফুক্ত চিত্ত হয় জেই জন। चना कूर्य कूबी सिंह विशांत स्वन ॥ এত:শুনি হাসি হাসি কহে গোয়ালিমী। ক্রপা করি শুন আরে এদানীর বাণী ।।

তোসার পালিত দেহ করিয়ে ধারণ i ত্য উপকার না করিব কি কারণ।। নিজ্য অ:মি তব পাশে বাডায়াত কৰি! কোন কথা মম প্রতি না কহ স্তব্দরি :! যে তব সাক্ষণ প্রণ মবেশ মন্দিনি। প্রেমের মহিমা তুমি জানিবে কি ধিন।। কেন আর ঠাট ছলা কর সম পালে। 9क तह नीघ जामि यारे निज वाटम ।। कई मएए उमानाएम कथा पुरे करन। পরে পোপী বাহডিল আপন ভবনে।। আদা অস্থ আদিয়ে কহিল গুণাকরে। শুনি তুঐ বররায় মাপন হারর ।। · কেতকীর কথা রায় করিয়ে আব্দ 🖓 অন্তরে হইল আশা আমি উদ্দীপন !! विक्**म** हर्देश खाटी बाउ हम चिंछ। নলে কিৰূপেতে পাব সেই বুসবতী।। যদি কোন মতে গিৱে আইলাম হেরে। উপার না পাই কিন্তু কপালের ফেরে।। বিধাতা বিগুণ খারে ঘটে তার হেন 🏱 মিছে মিছি ভার জনো ভাবি আমি কৈন।! বিজ বলে রসরবে কি ভাব ছতাশ। নিশি যোগে যা২ পূর্ণ হবে তব আশা।

कुमादित निनाद्यादा भगदना-द्यागः।

তদন্তর নৃপস্তত, মনে হয়ে হর্যুত্ राष्ट्रेटच खनाली बद्राबद्ध । क्यान मगट्य दाव, अहे भारु पशुच्तः करत तात पालन अग्रत ॥ <u> पिराजोट्य कारन ख्या, ब्हेटन सक्ल ब्र्या,</u> कार्य। भिष्ण मा स्टान् कथन । লৈপিতিক ছলনা করি নিশাযোগে ভার পুরি, याद इन देवल निक्रमा ॥ এপ ভাবি কেতকারে, ডালিয়ে কুমার ধীরে, চতুর চাতুরী-করি কয়। देनदवन दिना दन, नाहि (मिन अमा दन, শুন এই করেছি নির্ণয়।। রাত্রি ক্লোগে গুড়ে বসি, রব আদি সারা নিশি, করিব লখর সারাধন।

সন্ধান করিলে আর, নাছি পাবে সমাচার, भिक्ष मा १९८० ८८ साजन। শুনিয়ে কেতকী কয়, কি কাজ লাগর রায়, মোর করি ভোষাকে সন্ধান। থাতে হয় সিদ্ধ কাজ, ভাষা কর ধ্বরাজ-ज्ञि भक्षे माट्य ज्ञानवान गरिन এত বলি পূর্বনত, আনি আংয়াজন যত. খনে থার দিল কুমারেরে ! বুল্ন ভোজন বাম, সমুদার করি সায়, শহন কৰিল শ্যোপাৰে !! কলাব্র আশায় কত, মনে মান চিন্তাবিত, অধ্নাপ্ৰ রহিল মির্থি। क्ष कारल निया शह, तलमी क्ल आर्थिड, (मिश्र चिनिश इल मुधी। ভূখে শ্ব্যা পরিহরি, উঠে রায় ত্র্রা করি, भक्षापि कविल्यभाषांच। তদন্তর নৃপসূত, হইলেন সুসজ্জিত, पाष्ट्रेट सुन्मती विमामान।। মন্ত্র পাড় চলে রায়, কেছ না দেখিতে পাঃ

উপনীত কন্যার জারারে ৷

দাস দাসী হত জন, নাহি পায় দর্শন,

भागतम बन्ति उथाकारन ॥

গ্রহর যামিনা মতে, নিজাগত হল মথে,

ধীরে ধীরে চলে রস্থার।

किथिक हि बिरस भरम, बारविनास स्म हम्स्म.

দেবে কত গালক তথায় ম

मनुष्णार्च चार्रिक खरत, तक्षक भागरकाशस्ट,

সংগ্রিণ হয়ে শোভাব্রিত:।

ভার মধ্যে সুশোভিত, কাঞ্চনেতে সনির্দিত,

- স্কৃতি এতারে প্রবেকিতা।

त्म शारनाथ भटत धनी, निका बाह्य सूवननी,

বেন ভূমে চন্দ্রের উদয়।

মাণিকের অভরণ, অঞ্চে কাছে স্থাভন,

मिर्च द्वाह इक्ष्म विषय ॥

সানে মনে নান। মত, তর্করি নৃপ**হত,**

কিছু হির করিতে নারিল।

ক্ষণে মনে করে রায়, স্থবর্ণ লতার প্রায়,

नटह किंदा इड्रेटव छत्रल ॥

বুঝি তার অভিনায়, মৃত্ হাসি দিঞ্কয়,

রসরাজ ঐ সে সুন্দরী।

কনার সমান কান্তি, অন্য ৰূপ তব জাতির, শুন ৰূপ বা কহিতে পারি।।

ছিজ কর্তৃক ৰূপ বর্ণন।

কেন রসময় হুমি ভাবিত্ব অন্তরে। 🔻 ऋर्गणणः छ्वाम कत मृशमन्त्रिमीरत ॥ চন্দ্ৰ কি বৃষ্ঠেও কপের প্রতিরূপ। क्कि हुई इंडेक्ट मा इंडेक्ट खुक्स ।। क्कारशत गम कथ मा एक वि महत्म। केशया भिराद त्याका हि आहक क्ष्रव्या। দেখ নাল পট্টবাস্ত্র অঞ্জলোভা করে। व्याभिन भट्टम हत्स्य द्यम जनधात् ॥ চাঁচর চিকুরে ও যে দেখ পূর্ফে বেণী**।**। গৰুচের ভয়ে ওতো লুকাইয়ে ক্ণী !! ভাবের উপরে দেখ সিন্দ্ররের শোভা না হয় তুলনা যাহে অকুণের আভা।। মূপমদ বিন্দু ছথি লম্বিত হয়েছে। অরুণ গ্রাসিতে যেন রাছতে চলেছে।।

🖈 हात्र मिटबुटाङ किया इन्हरमद दिश्वा : নিতায়ার চন্দ্ আনি বেল দিল দেখা !৷ ভুগর ভলিমা কিবা পরশিমে শ্রুভি। চড়াইয়ে গুণ বেন স্মাছে রভিপতি।। শুক চঞ্জিন নাসা বড়ই স্কর 🕆 ें इस्ट्रेन कड़िन जाउन छान्छ त्यस ॥ শোভিত মুকুতা ভাহে দীখি করে মণি। रेक्टएत मूटश राग कन्त्रभान क्री ।। কি দিব ভুজন' সায় মুখেন উপসং ! জগতে ৰা পাই কিছু কলি ভার <mark>সীমা</mark>।। অনক আফ্ল ২্ল যখন দেখিয়ে! তাহার তুলনা যোগ্য **না** পা**ই ভারিয়ে**।। ভারণ জিনিয়ে কিবা অধর স্থন্দর। ना रहेरेव थकु वित्र छोहाह लामत !! তাকার মধ্যেতে কিবা দশন শোভিত। कुक कुद्धरमञ्ज रयम श्राक्षनः हिन्छ ॥ निवन्त मोलान के बाह्य श्रेक्षित। তারক ভ্রমর কিবা তাইটিত শোভিত।। নাচিছে খঞ্জন কিবা কমল উপজে। কিয়া শশি রশি**য়** পান করুয়ে চটকারে ॥

প্রদৃত্তি মূলে রতন কুওল শোভা ধরে किरिटर भत्रमू भभी याजमल करहा। णादक रामि अर्क मुश्च वत्रन अक्षरत i शूर्व हत्तु हाटक रयस घन स्मय मटन ॥ কিংবা সে উন্নত কুচ অতি স্বলোভিত মুমের শিখ্যে এন মতেশ উদিভান রতন জড়িত মণি বংফা স্থাপোচন। উদয় থিরিতে যেন উদিত ভগন ! মাভি কুপ হইতে উদিত লোমাবলি : সুধা আনে ধায় যেন পিপীলিকা চলি। মাণিক মৃণাল বিনি ভুক্ত শৌভা করে। স্তল প্রদা প্রাক্ষ্টিত যেন স্তল পরে। ফতেক কহিব আর শুন রসরাস। বিলমে কি ফল সিদ্ধা কর নিজ কাজ ব

কুমারের স্থন্দরীকে দর্শন ও চিহ্ন রাখা।

তবে নৃপস্কত, হরে হর্ষ যুত, : উপনীত সে নদনে। দেখি ৰূপ ভাৱ, ভাবে চমৎকার, व्यदेशमा इहेट्य क्षार्त ॥ दटन दिवि इस, व्यामादत मम्ब द मना श्रुत्य उत्त । নত্রা জীবন, কি কাজে ধারণ, यञ्जभ महिर्स ७८व । नद्भं नगनमः कतिद्धं हिन्दनः মলেতে ভাবিয়ে ভোর। **डिक्ट मा वाधिएस, याहेव कितिएस,** এ ন্যু উচিত মোর ধ এই মত স্থির, করিয়ে স্থারি, বক্ত বদলিয়ে লয় ৷ তাষুবের রাগ, দিয়ে তাহে দাগ, বাহড়িয়ে চলে রায়। রাখি প্রাণ মন, করিয়ে গমন, প্রবেশে কেতকী পুরে। भरकोषित दाय, याधन नेयाय, শর্ন করিজ পরেশা কিছু ক্ষণান্তরে, মিশা গেল দুরে, উঠি পরে রশময়।

প্রতিঃ ফ্লুডা যত, সারিয়ে ভাবত, ভাকিয়ে খোপীরে কয়। अन भाम जुमि, याह मीखनामी, নুপৰালা বরাবর । कि करत रम जन, कानि दिवत्र, অংশি বল শীঘ্র ভর !৷ धशारन कुमती, शाखाश्वान कृति. আপন অঙ্গেতে চায়। अदम्ब रजन, कृति निर्वीकृत्, হুভাশ ভাবয়ে ভায়।। वर्ता त्क इलिएस, याम वृह्तिएस, ্কেমনে লইয়ে যায় : পুন ধনী হেরে, বসন উপরে, তাষুলের দার্গ তার।। কে করিল হেন, না বুঝি কারণ, 🤡 যে হক চোরের কমা 🎶 🕔 यमि क्रान्न बनि, क्लन यादव ছनि, ना वृद्धि हेश्रह मन्न ।। (मय कि मानव, कृत्म कि मानव, ्षमञ्च काळ छात्र।

मुशारत क्षर्वी, व्याष्ट्र शृति धिति, কেমনে পাইল দার !! চোর ভিন্ন মন, কে করে হরণ, করিয়ে প্রাণে বিকল। গেল কোথাকারে, নহে ধরি ভারে, উচিত দিতাম কল li ছিলাম নিজায়, কি করিব হায়, কি কাল ঘুমের ঘোর। कृषि कांत्राशाद्य, विक देकदन खाद्य. তবে দে জ্বানিত চোর।। কিবা ভার নাম, কোথাকারে ধাম, কে জানে তাহার মূল। অশেষ প্রকারে, ভাবি ধনী পরে, প্রাণেতে হয় আকুল।। পরে ছলে धनी, मात्री वलि धनि, করিল কোকিল স্বরে। অমনি সবায়, আসিয়ে তথায়, দাঁড়াইল যোড়করে॥ चुर्निष्ठ (लाष्ट्रांस, कट्ट् नर्स कटन, नाहिक छाटा है छव।

নকলে থাকিতে, আমার পুরিতে, কেবা আসে কেবা বায়! বুঝিরু ভোদেরি, আছয়ে চাতুরী, নহে ভান্য কেবা পারে। না গারে দেবতা, কাহার যোগাত: আসি মম বাস হরে॥ यमाशि ष्याश्रम, ताश्रिटव कीवन. অন্মেৰণ কর তার: मरह दिপরীত, हईदि উচিত, প্ৰাণ বাঁচা হবে ভার।। শুনি এই ভাষ, স্বার তরাস, कंत्रवार्ड भरत करा। ডবাজিত জনে, এমত বচনে, দোষা না উচিত হয়।। মোরা দাসী তব, হেন **অস**ন্তব, কে করিল জানে কেবা। বিচারে আপনি, দেখ ঠাকুরাণি, উচিত হইবে ষেবা॥ বুরিরে নির্দোব, তাজি নিজ রোব, চিন্তা কর সরে মেলি।

हिन कारन छथा, त्याणी छेलनीजा, कि कंद्र नाजिन विन :: विश्व वरन छान, इहेल नकत, युक्ति नह त्याणी छारन। छारन नाना छल, दुक्ति त्य खेदल, नान: यह युक्ति छारन।

গোপী প্রতি রাজকন্যার মন্ত্রণা জিজ্ঞাসা।

মুদ্দরী বিশুর করি, গোপিকার করে ধরি,
প্রকাশিছে মন অভিলাব।
নিশি বিবরণ বত করাইছে অবগত,
মনোমধ্যে হইয়ে উদাস!
আদি কেবা মম পুরে, বাস পরিণয় করে,
তামুলের দাগ দিয়ে তায়।
মনঃ প্রাণ করি চুরি, গেল সে করি চাতুরী,
তাহাতে দহিছে মম কায়!!
কেমনে এমন বাসে, আইল বা কি সাহসে,

পরশিরে মম কায়, ঘটাইল হেন দায়, यन दङ् कदत्र छेठा हैन।। কি গুণে সে গুণমণি, বিকল করিল প্রাণা, লে জনে কেমনে পা'<u>ওয়া যায়।</u> ভার দর্শন বিনে, স্থির নাহি হয় প্রাণে, অতএব কহ দে উপায়।। জুদি বিদা এই কর্ম. কে বুরিতে পারে মর্ম্ম মোরে নাহি কর হে বঞ্চনা। গুনা আছে তব যশ, জান ভাল প্রেমরুদ, व्यक्षीनीदत्र ना (में वक्क्षा ॥ শুনিয়ে এবৰ বাণী, যু ড়য়ে যুগল পাণি, বলে গোপী আমি কৃত প্রাণী! মোরে এত সমাদর, অকারণ কেন কর, শুন ওচে নরেশনন্দিনি।। কি ভাব ভাবনা তার, যে মত যে বাঞ্চা বার. উপারে উপায় হয় যত। এই যুক্তি বলি আমি, কপট নিদ্রায় তুমি, শয়নে রহিও পূর্বমত।। व्यवना मिथिएंड शास्त्र, नर्स कार्या निक रहैं। शुर्व शृद्ध मन खाँखिलाय।

খত এব রাজবালা, হইল অধিক বেলা, আজ্ঞা হলে যাই নিজ বাস।। এত বলি গোয়ালিনী, আসি নিজ বাসে ধনী, কুমারে করিল নিবেদন।

শুনরে চতুর রায়, চাতুরা করিয়ে কয়, কোন কালে না শুনি এমন।।

ভদন্তর নৃপস্কত, দিবা কাষ্য পূর্ব্যক্ত, সাধিলেন গোপীর ভবনে !

হেতা খুহে রসবতী, হয়ে অতি ম্লান মতি, ভাবে তারে পাব কতক্ষণে।।

হেন কালে দিনকরে, দিবা অবসান করে, অন্তাচলে ক্রিল গমন।

क्रोवरन कीवन वाला, वक् वितरह वाक्रिला, मरनाष्ट्रःरथ भूमिल नहन ॥

করি নিশি দরশন, দোঁহার সম্ভোব মন, নিজ নিজ যুক্তি হির করে।

नमग्न रहेन यत्न, क्ला निजान उत्न,

.तद्र धनी निक भेगा भरत् ॥ 🕟

অনন্তর যুবরাজ, সাধিতে আপন কাজ, চলিলেন স্বন্দরীর স্থানে। মন্ত্র তেকে কোন জন, নাহি পার দরশন,
উপনীত ধনী বিদ্যমানে।।
দেখি পূর্বমত গত, আছে গবে নিজাবিত,
কি করিব কুমার ভাবিছে।
করে গেছি কালি যাহা, বিদিত হয়েছে তাই
করে গেছি কালি বাহা, বিদিত হয়েছে তাই
কি করি জানিতে পারে পাছে।।
ভিজ বলে রগরাজ, গাবধানে সাধ কাজ,
কপট নিজায় আছে ধনী।
আনিতে পারিলে যত, মন্ত্রণা হইবে হত,
বিবেচনা কর গুণমণি॥

কুমারের পুনর্বার ছলনা।
এই মত যুক্তি করি কুমার তংকপে।
কি ছলে ছলিব আজি ভাবে মনে মনে।
পরে যুক্তি স্থির করি মজের বলেতে।
গৃহে প্রেবেশিয়ে বলে তার নিকটেতে।
কেবিছে স্বর্ব কত তাযুল আখার।
রজতে নির্মিত কত শত আছে আর॥
নিঃশক্তে তাহার আজ্ঞানন খনাইল।
রজত আখার স্বর্বেরে মিশাইল।

তদন্তর তথা হতে করিরে গমন। लाली दारम উखित्न मरद्रमनम्मन । शृद्धमञ्ज्ञाशायात्र भवतम् थाकिरम् । দিবা নিশি করে চিন্তা প্রেয়দী লাগিয়ে। অিথানে ৰূপসী দিবা নিশি আসা স্বাশে। না দেখি নিরাশা ভাবে মনের হতাশে । **দেখে** ভারা অাথিভারা হয়ে গে**ল স্থি**র। সুখহরা সুখতারা হইল বাহির 🛭 অধিকন্ত নিজার কাতর জাগরণে। मूथ खकारेन जारर मा रहति तम करन । প্রভাতে উঠিয়ে ধনী হইল চঞ্চল। অদর্শন হতাশন তাহাতে প্রবল। व्यक्तिन मिवला मात्रा नत कलू महा। বাথিত হইরে প্রাণে দখীগণে কয়। খলে। সখি প্রেমানলে আমার ক্রয়। **দত্ন হতেছে বল কি করি উপায় 📳** विद्रह् अमन हाला ना जानि कथन 🕬 🕆 ना ट्टरत मननवाट्य अजीत वहन 🛚 श्वनि मधीर्थन गर्व करह मकस्टन व बक्त छेठना इस्स किर्मे कांग्रेटन 🛊

স্থির হও যে ২উক সে হবে বিদিত। আজি কালি পরে তারে পাইবে নিশ্চিত। এমত প্রবোধ বাক্য বুঝায় তাহারে। কুমারের কথা কিছু গুন তার পরে 🛭 প্রভাতে উঠিয়ে পূর্ব্বমত কার্যা যত। ক্রমে ক্রমে সে সকল সারিল ভাবত **।** কেতকী আপন কার্য্য সারি তার পরে। ত্বধের যোগান দিতে চলে রাজপুরে। একে একে नकल उरान हुआ मिरा। কন্যার আগারে পরে উত্তরিল গিয়ে। দেখিয়ে সুন্দরী তবে কহিতে লাগিল। ভোমার মন্ত্রণা গোপি বিফল হইল। আর যা হয়েছে নিশি যোগের ভিতরে সে সকল বৃত্তান্ত কহিল গোপিকারে। শুনিয়ে কেতকী কয় নায়িকা সদনে। ष्यताक हरत्रहि ७ षा कर्या कथा स्टान् ॥ শুনেছি দেখেছি বছ করি এই কাজ। তোমার কার্ব্যেত বড় পাইলাম লাল। मम कर्म नटर लाइ स्थन तमुब्छ। वृत्रिदश कत्रर (सर्वा लग्न छव मणि।।

क्ष विक इक्ष मिरंग (गार्भी विन शिन्। নায়িকা ক্ষনিয়ে মনে ভাবিতে লাগিল ! করিবে গোপিকা হির আছিল বিশ্বাস: এক্ষুণে সে সব মম হইল নিরাশ।। অন্তির আমার সদা হয় ধর জর। নিবারণ কিদে হবে ভাবি নিরম্বর ॥ প্রমন্ত চঞ্চল চিত্ত চকোর আমার। ব্যাকুল হয়েছে বড় নাহিক নিস্তার 🛚 এরপ করিয়ে ধনী ভাবিছে অন্তরে। গোপী গিয়ে সমুদায় কহে কুমারেরে 🕽 শুনিষে পূর্বের মত চাতুরীতে রায়। অন্তরে আহ্লাদ মুখে বলে একি দায়।। দ্রিছ বলে ভাল রায় বিদেশ আসিয়ে। গোপনে করিছ মঙ্গা দূতী ভাঁড়াইয়ে।

রাজকন্যার খেদোক্তি।
তদন্তর শুন সব রসিক স্কন।
বে ৰূপ হইল পরে ভার বিবরণ।
নিতা নিতা রসরাজ স্কারীর পুরে।
গমন করেন কেহু জানিতে না পারে।

এক দিন নুপস্থত চিম্ভে মনে মনে । আরু কত যাতায়াত করিব সেথানে ! এমত ভাষনা আরু কতকাল রবে। আমরি কেমনে কর্ম সিদ্ধ হবে করে ! কি ভাব ভাবয়ে মোরে জানিব কি ভাবে 🏗 সে ভাব ভাবিয়ে রায় বিমোহিত ভাবে। তার পরে তির করি নরেশ নক্ষন ! রীতি মত কর্ম যত করে সমাপন 🛚 দিবা শেষে কেতকীরে কহিল ডাকিয়ে আ'ঙ্গি একবার আসি নগর ভ্রমিয়ে।। এড বলি গেল চলি মন অভিলাষে। ষত্তের প্রভাবে রাজনিদনীর পাশে।। অপেনার গুণাগুণ করিতে প্রবণ ! . রহিলেন গুণাকর হইলে গোপন।। **এখানে विक्लानल मत्त्रम कृ**हिला। দিবা নিশি আছে ধনী ধরণী পতিতা।। বার বার ধারা বহে কুরঙ্গ নয়নে। শয়নে অপনে দলা জাগিতেছে মনে। वित्र अनार्भ कर्ज (इंडन क्रिंट । উঠি পুনর্মার আরে। इस সচিব্রত ॥

বলে কে ভাপিত প্রাণে সাধিলেক বাদ! কি ৰূপে পাইৰ আমি তার সুসংবাদ যে হক সে হক ভার পাষাণ হৃদয়। ञ्चला मतला वर्ध स्ट्रेस निमस्। পরশিয়ে মম অঞ্স মজাইল মন। द्युकारम कि लाज वृत्ति (योवन त्रुजन ॥ এসব শুনিয়ে রায় মনেতে ভাবিল। স্থন্দরীর খেদে খেদ অধিক বাড়িল !! মিলন সলিল আসা উথলি অন্তরে। ত্বরিত্তড়িত্প্রায় দেখা দিল পরে।। ক্ষণ মাত্র তথা হতে চলি গেল দূরে। উত্তরিল রসরাব্দ কেতকীর পুরে।। এই নৈ স্থানরী হেরি বলি আহামরি। অধরা হইরে পড়ে ধরার উপরি।। ক্রত আসি যত দাসী তোলে সনোচুথে। স্বাদিত জল আনি কেই দের মুখে॥ করবোড় করি কহে কছ বিবরণ। रुठा ए षटेभर्ग स्टन किट्मत कातन ॥ कृत्नत्र कामिनी कृपि माहि कत नाक। করিবে কলক অকলক কুল মাজ।।

ধৈষ্য ধর রাজবালা স্থির কর মন।
পাছে কেহ শুনে এ সকল বিবরণ।।
শুনি ধনী তা সবারে উত্তর না দিল।
মনাশুণে মনে মনে ভাবিতে লাগিধ।।
দিজ বলে রসবতি চিন্তা কি তাহার।
বায় লাগি চিন্ত চিন্তা অধিক উহার।।

কুমারের মিলনের উপায় চিন্তা!

হেতা গোপীবাদে রায়, চিন্তায় চিন্তিত কায়

হয়ে শেবে হির করে মনে।

দেখাইতে কারিগরি, মনেতে মানস করি,

করে শেষে কৌশল যতনে।

চিত্রপটে নিজ্ঞ কায়, চিত্র করে রসয়ায়,

পরম স্থলর চমৎকার।

দেখি মনমর্থ মন, অমনি হয় মোহন,

অধিক বর্ণনা করা ভার।

বিভীরত মহোদয়, কামিনীর প্রেময়য়,

ভাষাতে তমুর তরি, ভাসাইতে ইচ্ছা করি,
নিজ প্রিচয় তৎপর ।
বিনয়ে লিখিল যত, বর্ণনা কি হয় তত,
পরে যাহা লিখিব কিঞ্চিত্।
অমুগ্রহে সর্বা জন, করিবেন নিরীক্ষণ,
দীন দিজে হয়ে ক্লপান্থিত।।

কুমারের পতা।

ठिळ्का रा

প্রধাসুথি তব মুখ দেখি স্থা প্রায়।
রংগহানে প্রেয়নি লো দৃফে প্রাণ যায়।
গিধিনী গঞ্জিত ক্রুতি শোভিত কুগুলে।
নিশি দিবা ভাবি দহি দুঃখ দাবানলে।
তরাও কটাক্ষ করি পুরাও বাসনা।
বড়ই ছুর্বার মন নাহি শুনে মানা।
আশরে থাকিয়ে অতি হয়েছি আকুল।
শেষ কর যে সকল হবে প্রতিকুল।।
আছরে তোমাতে প্রেম জলধি জীবন।
সিন্ধু বিন্দু দানে তবে কেন হে কুপুণ॥

এ আশে বঞ্চিত হলে হইব নিরাশ।
ইঙ্গিতে বুঝিয়ে মোর পূরহ প্রথান।।
দেহ দহে প্রেমানলে বিষম প্রমাদ।
শারের সহায় তাজি করহ প্রসাদ।।
মিলায়ে পদের আদা বর্ণ সঞ্চারিবে।
ভূষাযুক্ত চাতকে কতের না করিবে।।

কুমারের স্থন্দরী প্রতি পত্র প্রদান।

তমত করিয়ে লিখিয়ে রায়।
রাখিল বসনে বাঁথিয়ে তায়।।
ভাবিছে কথন হুইবে নিশি।
দেখিব যাইয়ে প্রাণ প্রেয়সী।।
হেন কালে গেল দিবসনি।।
আগত হুইল আসি রজনী।।
নিজ কাজ যত সারিয়ে পরে।
গোপীকে ছলিয়ে গমন করে।।
মস্তের প্রভাবে চলে নত্ত্রি।
কহু না দেখিল রূপ মাধুরী।।

প্রহরী যতেক আছিল ধারে। দেখিতে না পায় কেহ ভাহারে!! ভবেত ব্ৰিক বস্থাবেশে याहेरत छन्द्र भूत अरवरम्। ८४थिल वितरह दंशिएक धनी । বাংকুল হইয়ে পড়ে ধর্মী 🛭 নাহি হে:র ছভে বাস ভূষণ। थ्याहे ५ किन भूग वनगा। ক্হিছে দারুণ কে দিল ছালা। এক কি সহিতে পারে অবলা।। যে দিল আমারে এক বাতনা। কথন ভাষার ভাল হবে না।। মানৰে কভু কি পাৱে এমন ! যে হকু সামানা নয় সে জন।। ভাহার সাহদে দি ধন্যাদ। কেমনৈ এমন নাধে প্রমাদ !! আর না বাঁচিব ভার বিহুমে। বল কে মিলায় আনি সে জনে!! মদন আগুন উঠিল ছলে। দিগুণ বাডিল মল্যানিলে।।

এ ছথের কথা কহিব কায়।

কে আছে আনিয়ে মিলায় তার॥

কি করি উপায় না দেখি কিছু।

আমার অদৃষ্টে কি হবে পিছু॥

একথা শ্রবণে থেদেতে রায়।

পত্রথানি দিল অমনি তায়॥

মন হারা হয়ে বাহির হল।

দেহ মাত্র লয়ে বাসাতে গেল।

এখানেতে পত্র পাইয়ে ধনী।

বলে আহা মরি কি গুণমণি!

ভিজ বলে কেন ভাব বিসাদ।
পড় পাতি পাবে তার সংবাদ॥

রসবতীর পত্র পাঠান্তে সথা প্রতি উক্তি।

রসবতী, পড়ে পাতি, হয়ে অতি, উতলা।
ছংখ ত্যাগি, স্থ ভাগী, বঁধু লাগি ব্যাকুলা।
মানা মনে, নাহি মানে, প্রেমাগুনে, বাতনা।
কিসে পাব, কারে কব, এই সব, ভাবনা।

इर्ष भिन्न, इरह कार्न, मानी क्षान, जाकिन।
इरत नाम्न, कामा कर्म, तम उनम्न, किह्न ।
काभि पारत, नाहि हरता, खत नरत राणिन।
खिरणात, ममानात, पानि जार, विभिन्न।
काभारत, वान करता, कात श्रुरत, काभिरत।
मोध करता, जानि जारत, वांगा भारत, जीवरन ।
याक्ष्मा, भारे कान, नाहि जान, निकरन।
सिक मान, हास हास, आग साथ, कशरों।
खिन रहन, विवतम, मरीजग, शहेन।
तांग गंगा, शिर हंगा, मव कथा कहिन।
दांकतांगी, जारत खीन, किक वांगी, कि कह।
विक क्स, सांगा हस, मिरान जास, विवाह।।

দাসীগণ কর্ত্ক রাণী প্রতি সংবাদ প্রদান।

তদন্তর রাজরাণী দাসীরে জিজ্ঞাসে।
কহ বাণী নন্দিনী এমন হল কিসে॥
শুনি দাসী যোড় করে কহিতে লাগিল।
আদ্য অন্ত যে কিছু সকল নিবেদিল।।

ত্তবে রাণী এত শুনি ভূপতির পাশে। চুহিতার কথা যত মুদ্ধ মৃদ্ধ ভাষে।। বে ৰূপ আশ্চ্যা কন্ম করেছে সে জন। বিস্তারিত সে সকল কলে বিবরণ।। রাজা বলে রাণি ভূমি জান পূর্বা যত। বিভা হেতু এসেছিল কত রাজস্তুত।। সে স্বারে তনরার না হল সক্তি: খেদে ভারা কোখা গেল ছাড়িয়ে বসতি " এখন হয়েছে তার ইচ্ছা বরিবারে। যা শুনানে হেন জনে পাব কি প্রকারে 🖯 দ্বশন টিফ হদি পাওয়া বায় ভাব। তবে নে করিতে কিছু পারি প্রতিকার 🛚 ষাহ রাণী শীঘ্রগতি মন্দিনীর পুরে। य किंदु थेकिए। विङ्क अटम वन भारत ।। এমত শুনিয়ে রাণা চলিলেন ধেয়ে: স্ত্রক্ষিণী পুরি মধ্যে উত্তরিল গিয়ে॥ মারে দেখি স্থরঙ্গিনী লজ্জিত হইল। मुथ जुलि शृर्वगठ कथा ना कहिन।। ইঙ্গিতে বুঝিল রাণী তুহিতার মন। लाभरन मामीरत वरण कर अरहाजन।।

मानी विद्यु स्मर्टे कथा उन्मतीत्त 🗪। निरंश स्वनमंत्री इन धूनक क्रमंश ।। চিত্রপটে লেখা ছিল অব্যব ভারি। বাহির করিল শীঘ্র নরেশ কুমারী !! রসময়ী পত্রী সহ আছিল মিলন। स्मन्ती लहेन छाङ। कतिए। एएन क्षित्रिक्षि हिज्य भी मिल मानी करहा। ভরে: লয়ে দিল গিয়ে দুপ বরাবরে॥ দেখিয়ে সন্ধোষ গ্ৰাণী প্ৰতিমূৰ্ত্তি ভার। মনে মনে ভাবে একি ৰূপ চমৎকার !! সামান্য মনুধ্য বলি না ভাবয়ে মনে। আহ্বাদে নে পট লয়ে দিলেন রাজনে 🖰 হেরিয়ে মূরতি মহীপতি ক্ট চিত। বিশেষ ক্ষমতা জেনে হৃদে পুলকিত।। তদম্ভর পট লয়ে বসিয়ে সভায়। পাত্র মিত্র সভাগণে ভাকিল সবায় 🛊 . কহিতে লাগিল পরে পুরের রুজান্ত। হরেছে আশ্রুষ্টা বত তার আদ্য অস্ত্র।। শুনি সভাসদ্যত হইল বিস্ময়। बर्ज माहि छनि रून ना रूख ना रहा।।

মন্ত্ৰীয়ে কৰ্ম এই নহে কদাচিত ! দৈব।ধীন কম্ম এই হইবে নিশ্চিত।। ভূপ বলে নর ২টে জেনেছি প্রকারে। পত লিখি গাখি গেছে কনাার আগারে! এসেছে এদেশে সেই করিতে ভ্রমণ ! এই দেখ দেই প্রতিমূর্ত্তির গঠন 🖰 এত বলি দিল কেলি সভা বিদ্যমানে। দেখি ৰূপ অপৰূপ ভাবে সৰে মনে।। एमछत्र मृथ करह छम मर्काजन। কর তত্ত্ব এনগরে সবার ভবন।। ষধায় পাইবে ভার করিতে সন্ধান। যতনে আনিৰে ভাৱে মম বিদামান !! স্কুমারী কন্যা মম অতি স্থরঞ্গী। তার বিভা হেতু ভাবি দিবস রজনী॥ করি তত্ত্ব কত স্থানে সূপাত্র কারণে। নাহি মিলে যোগ্য বর সদা চিস্তা মনে 🖰 যদি বিধি এই জনে মিলায় সদনে! मत्नामार्देश मित जारत कना। तुलू धरन ॥ এত শুনি দ্বিজ কয় নিকটে রাজার ! যে যুক্তি করেছ এই উচিত ইহার !।

দূতগণের কুমার অম্বেষণা

তদন্তর দাসগণ, নৃপাভলয় সর্বজন, অন্তেষণ করে সে নগরে। সর্বার ভব্দে ফিরি, সে জনে নাহিক ছেরি, মন চুংগে চুংখিত অন্তরে 🛭 পরে এই জনরর, পরস্পর শুনি সব, প্রক্রাণ আসি মিলে তথা। স্থাইয়ে তা স্বায়, কিছু না শুনিতে পায়, ভাবে কিনে পাইব বারতা॥ এখানে কেভকী ধনী, শুনি এই সব বাণী, कुभारत कहिए विवत्। কুমার শুনিয়ে কয়, কেন মাদী কর ভয়, হবে যাহা বিধির লিখন।। কেতকী কহিছে পুন, নাহি জানি তব গুণ, नृश किछ काना छक कान। আমি ছবিনী গোপিনী, ভাল মন্দ নাহি জানি, পাছে মম ঘটয়ে জঞ্জাল।। **এই कथा (माँटिह इय़, (इन काटनटिंड उथाय़,** ः উপনীত নপ দৈনাগণ।

ব স্থাতে অগাকর, যিনি কোটি শশধর, দেখি চমকিত সর্বজন।। প্রতিমুখি থাহা ছিল, তার সঙ্গে মিলাইন, গ্ৰেচন সে ভইল গঠন। निकरेष इत्य इत्यः ए। ए क्रु क्रिकेश मत्यः बिर्विभिन्न कुमान भन्न ॥

শুন শুন মহকোর, ভূপনির অভিপ্রায়, ভোমা দরশান করিবারে।

অভতৰ ধৰ্ণজ, না কৰি ইহাতে ব্যাক্ত.

চল শীঘ্র রাজ দরবারে ॥

শুনিয়ে এরূপ ভাষ, যাইতে ভূপের পাশ,

উরামে কুমার করে বেশ।

একে ৰূপ চনৎকার, অধিক কি কব আর,

বৰ্ণনা না হয় স্বিশেষ।।

চলিল দূতের সঙ্গে, ক্ষণেক মঞ্জে আভিজে,

ভাবে মনে কি হবে দে গেলে। ধুর্ত্তপণা দেখি মোর, হইয়ে রাগেতে ভোর,

না জ।নি বা কোন থেলা খেলে॥ এখানেতে নরপতি, চিন্তায় চিন্তিত মতি,

সভাসদ লইয়ে সভায়।

হেন কালে ভ্তা সঙ্গে, কুমার আগিয়ে রঙ্গে,
সভা মাঝে হইল উদয়।।
দেখি ৰূপ অপৰূপ মনে মনে ভাবে ভূপ,
কে বটে কেমনে জানা খাবে।
দিজ বুঝি অভিপ্রায়, হেসে নৃপতিরে কয়,
পরিচয় লহ টের পাবে!।

কুমারের পরিচয় এবং বিবাহ।

তদন্তরে লইবে কুমারে স্থানরে।
বসঃইল সিংহাসনে ধরি তার করে।
জিজ্ঞাসিল নররায় কিবা তব নাম।
কাহার তন্য় তুমি কোথা তব ধায়।
দেব বক্ষ সক্ষর কি হইবে মানব।
যে দেখি ভোমার কর্ম অতি অসম্ভব।
দেবতা দানব নহি শুন পরিচয়।।
কাঞ্চনের অধিপতি সত্যধৃতি রায়।
স্থরনেন নাম মম তাঁহার তন্য়।

দেবীদন্ত বিদ্ধ মন্ত্র আছিল আমার। भिर वित्य कति एक शाम्त्रया वराशात ॥ পুলকিত হয়ে ভূপ শুনি পরিচয়। মনে মনে করে এ সামান্য ব্যক্তি নয়।। কন্যা যোগ্য হর এই রাজ্যর নন্দন। শুভ দিন দেখি কন্য করিব অপ্।। তার পরে কুমারেরে কহে নূপবর। মম কল্যা ব্রপে ধন্যা তারে বিজ্ঞা কর 🛚 গুনিরে কুমার মনে আনন্দ অপার। 'অন্তরে আনন্দ মুখে না করে প্রচার। বুঝি অভিপ্রায় রায় সভায় বসিয়ে। সভা জনে আত্মগণে কহিছে হাসিয়ে। শুন সবে স্র্জিণী আমরে বালিকা। ৰূপে তার ত্রিভুবন মোহন কারিকা।। বিভানা করিবে পূর্বেছিল ভার পণ। সম্মতি হয়েছে এবে করিতে বরণ 🛚 পূর্বেক ত নৃপস্থত তার আশে আসে। নিরাশ ২ইয়ে গেল মনের হুতাশে 🖡 এই হেডু সর্বাদা অসুখ ছিল মোর। বিধাতা সদয় হয়ে ঘুচায় সে ঘোর 🛭

বহু অন্বেষণে পাত্র না মেলে ভুবনে। ঈশ্বর ইচ্ছায় এবে মিলিল সদনে !! মম মন এইকণ বিভা দিব তার। সর্বজন অংরোজন করহ ইচার 🛭 হেন শুনে দাসগণে হই য়ে ভংগর। নির্মাইল প্রশেভন স্থানে স্থানে যর।। হালঝি দপণে ভিত্তি ক্য়িক মড়িত। কত ছবি যিনি রবি তাহাতে খণিত।। মিনেকারি সারি সারি হতা। স্ত্রিপ্তার। স্থানে স্থানে শোভ: পায় ঝাড় চকৎকার !! সুকোমল মধ্মল পাতে ধর্তেলে। र्यामा जना नानाविथ वाद्य उदल उदल ॥ সাসি দ্বারা সব দার অতি স্থশোতন। কত আর কব তার করিয়ে বর্ণন !! তৎপরে তৎপর হয়ে দূতগণ গিয়ে। ব'দ্যকর বহুতর আনিল ডাকিয়ে॥ স্থানে স্থানে কোন জনে পত্ৰ লয়ে গোল। নিমন্ত্রণ পেয়ে সবে আসিতে লাগিল ॥ বাই ভাঁড় নট আদি আসি কও জন। भी**उ वामा महश्यत कारत अर्थन्य ।**

· "

নহবত্নান মত বাজে দিবা নিশি! বাজে তোল কিবা রোল স্বস্থুর বাঁশী। ে তেণু বীণা শব্দ বিনা নাহি শুনি বাণী। ঘড়ি ঘড়ি বাঙ্গে ঘড়ি সাধ্য কি বাখানি !! অংহ্লাদে হইয়ে নম নুপতির মন! প্রভ দিনে প্রভ লয় কৈল নিরূপণ।। কন্যা পাত্র দোঁহাকারে ব্যায়ে আসনে ! তইল হরিদ্রা আদি মাখায় যতনে 🛚 তীর্প জল আনি দৌহে স্থান করাইল : নানাবিধ আজ্রণ অঞ্চে প্রাইল।। नवी मदब महराध्मदब निमश इहेरस । মনোসাধে নাজাইছে নূপের ভনয়ে॥ অলকা তিলকা দিল যা যেখানে সাজে। তারা মাজ বিজরাজ যেমন বিরাজে !৷ ষেমন নায়িকা যোগ্য নায়ক তেমন। (यहे अद्भ याहा भारक मिल (महेकन ॥ ভদন্তরে কুমারেরে বসায়ে আদনে। জী আচার ব্যবহার করে রামাগণে।। ভার পর নূপবর শুভক্ষণ করি। করে করে কুমারেরে সঁপিল কুমারী॥

নথা মেলি ছলাহলি আনন্দ অপার। বাদ্যভাগু মহাকাণ্ড আশ্চর্য ব্যাপার। এই ৰূপ দিল ভূপ বিভা বিধি মত। দীন দিজ করে ইহা সংক্ষেপে রচিত :

রামাগণের পরিছাস।

মখীগণ ভদন্তরে, পরিহাত করিবারে, বাসরেতে করিল গমন:

ভবনের শোভা করি, বসিলেন সংবি সারি, বুঝিবারে রমিক রতন।।

একে সে মোহন ৰূপ, আর তাহে রসকূপ, দেখি মন্মধেতে মজে সবে।

এক চিত্তে নির্কাশন, করি রহে সর্বাজন, ভাবে সবে কিবা কথা করে।।

পরে ধনীর সঞ্জিনী, হাসি হাসি করে বাণী, মনোচোর এই জন বটে।

আর কোথা পলাইবে, আছে সবে বুঝা যাবে, যদি আজি পেয়েছি নিফটে।

কোন জন হাসি কয়, দেখি বড় ভয় হয়, পাছে মন কৰছে হল। চোর সঙ্গে খালাপন, নাহি করে কোন জন।
পূর্ববাপর কহে সাধুজন।
ভার জন হাসি কয়, যা কহিলে নিখ্যা নয়,
ভাবে না সাজিবে বে চাকরী।

আর না সাজিবে সে চাতুরী!

কিছু ভর নাহি আয়, ইকার যে তাবিচার, করিবেন নারশকুমারী 🛊

শুনি কথা রসরাজ। না করিয়ে ফণ স্থান, মৃত্য হাসি কচেন তথন।

হেন বিপরীত ভবে শুনিয়ে লাগে ভরাস,

চোর বল না বুঝি করেণ।। এক বার নেখি যায়, প্রাণ মন সব যায়,

তার মন কে হরিতে পারে।

শশধরে মূগ অক, দেই ৰূপ একলক্ষ,

(मर्थ मृद्य विद्युचन) कृद्य ।।

তবে যে মন্ত্রণা করে, রাজকন্যা পাশে মোরে। যন্ত্রণা দিবে কি অতিশয়।

আছি ভাহে উপনীত, যাহ। আছে মনোনীত, কর ভাহা যাহা মনে লয়।।

্বাঁধি হাদি কারাগারে, না হয় রাধুন মোচর: হামুন কটাক্ষ ভীক্ষুবাণ। নহে প্রেম রজ্জু বেড়ি, দেন মোর হাতে কড়ি, হৈদে দেন ৬ কুচ পাবার ।।

শিক্ষর হইলে পরে, ভারে ক্ষমা সবে করে, সর্বত্যেত এই বাবহার।

না জানি এ বেশাচার, কি আচার কি বিচার। ইক্ষা যেই কর নে প্রকার।।

श्वि अप्रकृष वानी, हात्रात मूलन समी, प्राप्त प्राप्त करत विस्तृत्वा ।

দে মোর মানস ছিল, বিধি ভাতা মিলাইল, কিন্তু এক অংছয়ে বাসনা॥

গোপনে যথন মোরে, ছলি গেল ছলা করে, জানাইয়ে গুণ আগনার।

ভাদে মম পরিচয়, না পাইল রসময়, আজি আমি স্বধিব সে ধার।।

হেন ছির করি মনে, ক্ছে স্থী সম্বোধনে, শুন সবে বচন আমার।

खन मत्त्र वहन जामात्र।

উত্তরে উত্তর দিতে, দোব নাহি কোন মতে, বিধিমতে বিধি বিধাতার ।

সামান্য ধনের চোরে, রাথে সবে কারাগারে, পদ বেড়ি বেড়ি দিয়া তার।

এচোৱে উচিত বেই, সে ৰূপ যুদ্দি বা দেই. প্রেমোদয়ে হবে প্রেমদার।। যে ছিল আমার পণ, মিলেছে ত নুপধন, বুসিক না হয়ে বাজি কর। বিধিয় যা ক্ষি থাকে, অবশ্য তা ঘটে তাকে, भाष्की काजिमाम कविवत । उत्त यनि गरत दन, शरक कादा किरम इन, মে সব পরের উপদেশ। শন্ত মন্ত্র বংশ হেন, মজেছে আমার মন. এফাণে সে ব্যক্ত স্বিশেষ।। श्वनि यञ भशी करा, मञ्ज वर्षे मिशा मस्, ব্যাৰে কোথা বুকে পিক স্বর। **সংসারে** রুমণী পদ, রুসিক অঞ্<mark>ক ভূষণ.</mark> ইথে সৰে করে হতাদর।। ष्ट्रिटिण सम्बा रतन, कावा तम ना शाकितन, তবে ৰূপা নব্য কাল ভার! এইৰপ ৰাঙ্গ বাণী, কহিছে যতেক ধনী, শুনি কথা কহিছে কুমার।। বুঝিলে ত স্থীগণ, বেমন চোরের মন, •. वटन ताथ कृषि काताशादत।

ইথে ভাবে বুঝা যায়, আছে কোন অভিপ্রায়, চোর মর্ম্ম কে বুঝিতে পারে॥

আছে পূর্কাপর চোরে, রাথে সবে বন্দী করে, এটোরে উচিত সেই দণ্ড ৷

কিন্তু ক্ৰি মাজে যম. যে ধন আছে উত্তম, পাছে হন হরিতে প্রচণ্ড॥

ছরিলে পরের ধন জানিতে চোরের মন, কি বিশ্বাদে বাখি ধনগোরে।

নারীর সর্বস্থ ধন হৃদে তঃ আছে স্থাপন, যদি চোর চুরি করে তারে॥

ভাত এব চোরে সখি নয়নে নয়নে রাখি, কণ মাত্র না হবে বিচ্ছেদ।

তবে হবে ধনাদায়, যুচিবে সকল দায়, মিলনের হইবে প্রভেদ ॥

এই ৰূপ ব্যঙ্গ বাণী, শুনি তবে শুণুমণি, বুদিক বুমণী প্রতি কয়।

এবেছি স্থপের তরে, নয়ন প্রহরী করে, মনোচোর দণ্ড যোগ্য নয়।।

না হয় হে ভুজ পালে, বাঁধি রাখ নিজবাসে, সেও ভাল দও যে আমার। রসনা যে রস চার বাঁধ তারে রসনায়,

এই দণ্ড উচিত ভোমার ।

একপ কৌতুক দেখে, সধীগণ মনোস্কথে,
প্রশংসিয়ে নাগরে তথন।

অক্ষেক রজনী গত, ভাবে ভাব মনোগত,
ক্রমে সবে করিল গমন।।

বিরল পেয়ে দুজনে, উভয়ে সন্ডোব মনে,
স্বকার্যা সাধিতে হল মন।

ভিছা নিজ ভাবে কয়, বিফলে বামিনী যায়,
বাঞ্জা পূর্ণ কর এই ফণ্ড।।

নায়ক নায়িকার বিহার।
তদন্তরে ছইছনে পালকে বসিয়ে।
খায় মিঠা পান গল্ধে আমোদিতে হিয়ে॥
খায় মিঠা পান গল্ধে আমোদিতে হিয়ে॥
খিলি পূর্ণ করি কত রাখে সহচরী।
রাখিল চন্দন চুয়া কেশর কন্তরী॥
ক্ষীর চিনি মিছরি সন্দেশ নানা মত।
সীতল গল্পার জল কপুরি বাসিত॥
নানাজাতি পুল্প মালা রাখে শালাইয়ে।
নে সৌরবে মধুকর আইল মাতিয়ে॥

পিক সৰ কুছরৰ করিতে লাগিল। শুনি দৌহাকার মন মোহিত হইল।। ত্তবে স্থীগণে ধনী করিল ইঞ্চিত। আরম্ভ করিল গ্রীত বাদেরে সহিত !। মধ্র মৃদঞ্বাজে আর নানা যন্ত। মিলাইয়ে তাল মান আলাপে বসস্থ !! মন্দিরা বাজায় কেহ বাজায় তথুরা। বীনা বংশী আঢ়ি করি বাজে সপ্তসরা।। সঙ্গীতে পণ্ডিত রায় হারাইয়ে জ্ঞান। मधो मरक घटनावरक आवश्विम गान।। শুনি ধনী মোহিত হইয়ে গাম গান। বীনাস্বরে প্রিস্থরে মিলাইয়ে তান।। দোঁহাকার স্বরে স্মর হৃদয় ভেদিল। ছাড়ি গাত স্বহিত আরম্ব করিল।। দেখি স্থীগণ যন্ত্ৰ তক্স কেলাইরে। লাজে স্থানান্তরে সবে গেল পলাইয়ে।। **লজ্জা** শিরে বজু তবে হানি **তুইজন।** সাধিতে অরের কর্ম সমর্পিল মন 🖡 घन घन व्यविनम्न निष्म छूलिए । 🗀 🗆 धन धम हत्रत्वे सुक्रुक्ष वर्शक्रह ॥

আবেশে অবশ অঙ্গ ছীনি ভুজন্ম i ্চন্দ্রাননে চন্দ্রানন কিবা স্তর্খেদির।। কামের সাধার তবে প্রেমে উথলিল। মন্তন দণ্ডেতে রায় মথিতে লাগিল।। লক্ষা পেয়ে লক্ষা ভবে কোথা পালাইল। ভয় ভেকে ভয় তবে মভয় পাইল। हन्द्रानत्न (इति ऋथा जानन्द्र अभात । মনের আবেশে পান করিছে কুমার ৷ নাগর সাগর মত্থে করি তুখাজ্ঞান। ष्यमनि जुनिएस धनी मुद्ध मिन शान।। ত্রি দেখি নয়নে নয়ন সে সময়। নিবাইল কামানল জলে জলময়।। বিধিমতে কাম ত্রত করি উচ্চাগন। আন্তে দোঁহে নিজ। যায় হয়ে অতেতন।। দ্বিন্দ নিন্দ ভাবে তবে দোঁহাকারে কয়। প্রথমে এতেক প্রেম বহু তঃথে হয়।।

কুমারের স্বদেশ গমনোদ্যোগ।
কিছু দিন এই মত, থাকে সদা স্থাধ রত, '
রসিকেরে লইরে কামিনী।

যতেক আছিল খেদ, দে সৰ ধ্ইল ছেদ, নিত্য স্থাপে বঞ্জে য**্মিনী** । এইকপে দকেতিকে, মজিরে অংশ্ব স্কুথে, প্রেমে বন্ধ হল চুইজন। উভয়ে উভয় প্রাণ, পলকে প্রলয় জনে, এক ভিল বিনা দরশন !! मिटि कि हो हारि देश, कि माद होड़ा में ब নাহি চায় মূদিতে নয়ন! निज्ञान शालारकाशात्र, धमाण होतार विरात, স্থান হের রহে স্থীগণ।। अकारत तमगर, विकास श्रेशतात्र, বাঞা চিভা চইল অধিক। মনে ভাবে দেশ ছাড়া, আরু ভাতাগণে হারা, স্থুথ ভোগে আছি মোরে ধিক।। এই সব চিস্তাযুত, হইয়ে নরেক্রস্কত, মনে মনে করে বিবেচনা। कोगाल मवादत विल, यादेव किरमां ठिल, निक कति मटनत कामना॥ - ভবে উঠি প্রভাষেতে, গিয়ে নূপ সমীপেতে,

नविमद्य कत ब्लाद्य क्य ।

মনেতে করেছি আশ, যাইব আপন বাদ, অনুপ্রতে যদি আজা হয়।। গুহে মম পিতা মাতা, আছে সবে চিম্বান্থিতা, ছলে মাত্র এমেছি বিদেশ। नाहि तिथि तम भवाश, वर्वमा ठक्षण काग्न, স্থির নয় কি কব বিশেষ॥ আর এক শভিপ্রায়, সঙ্গে তব চুহিতায়, লয়ে যাব আপন ভবনে ! শুনি জামাভার বীণী, সচিন্তিত নপমণি, কহিছেন সজল নঃনে 1 সবে মান এক কন্যে, দোসর নাহিক অন্যে পুত্রাধিক পেয়েছি তোমারে। ভোমা দোঁহা ত্যাগ করি, হহিব এপ্রাণ ধূরি." क्स्मारम दल मां अ भरभारत ॥ এইৰপে নর রায়, কহি বছ জামাতায়, পরে হল পাঠাতে সম্মতি। ডাকি যত আত্ম জনে, আর সেনাধ্যক্ষগণে, সবিশেষ কহেন ভূপতি। কন্যা আর জামাতায়, যাবে দোঁহে নিজালয়, আয়োজন কর সে ভাবত।

ষে আজন বলৈরে সায়, দিয়ে দ্তগণ ধায়, চতুর্দিগে ধায় শত শত ॥

আনিল জাহাল কত, বজ্বা পিনিশ শভ.

एल्क डाउँला अध्यम ।

হয়ে অতি ত্তরান্তিত, আনিলেক মনোনীত, গতি বেগে যেমন প্রবন্ধ

নানা বিধ খাদা চয়, চুর্বা চোষা লেহা পের, করিলেফ পরিপূর্ণ ভরী।

র্ডাডি মাজা করি সাজ মন্তকে পরিয়ে ভাজ প্রকোতুলিল যাত্রা করি।।

কামাত। যৌতুক আদি, দিল নানা রত্ন নিধি, বজ দ্বা ভূবন রঞ্জন।

ভূষণ মাণিক হার, জি কর বিস্তার তার,

প্রবালাদি বজত কাঞ্চন।

দাস দাসী কত জন, সক্রেতে দিল রাজন, তবে যাত্রা করে শুভক্ষণে।

পরে গিয়ে স্থামুখা, ছল ছল করি স্থাপি. প্রণমিল জননী চরণে ।

ৰলে মা কর বিদায়, যাইব গুগুরালয়,

কোনে পাঠাব আমি, দরিছের খন ভূমি,
প্রাণ ধন নয়ন অঞ্চন ॥
ভিজ গিয়ে কহে বাণী, শুন ওগো রাজ বাণি,
কেন খেদ কর অকারণ।
দেখ ভূমি সর্ব্ব তল, কোথায় ডানেছ গল,
প্রিলারে ক্নার শোভন ॥

নায়ক নায়িকার বিদায় ও উদয় নগরে উপস্থিত।

এই ৰূপ খেদ রাণী করিল বিস্তর!
তনয়ারে স্থাক্ষিত করে তদন্তর।
হরিদ্যা নাখারে অক্ষে দিল অভরণ।
আল্তা চরণে দিল দেখিতে শোভন।
খাদা দ্রব্য নানা বিপ করায়ে ভোজন।
কন্যারে পাঠান রাণী চুয়িয়ে বদন।
তবে পিতা মাভা পদে প্রণমিষে পনী।
স্থানির সহিত চলে যথায় তরণা।
শুভক্তণে চুই জনে আরোহিতে তরি।
অমনি দামামা ডক্কা উঠিল লহুরী।

माम मामी रेमनाशंश करत महारताल। শব্দেতে না পায় কেহ শুনিবারে বোল। খুলিল জাহাজ তবে ছাড়ি সেই দেশ। কভ শত নগর ছাড়িল অবশেষ ॥ এমতে যাইতে পথে কিছু দিন পরে। উপনীত হল গিয়ে উদয় নগরে ॥ বেলা অবসানে ভবে অশ্ব আরোহণে! গুসজ্জিত হয়ে রায় গেলেন ভ্রমণে 🖟 তার পরে সে নগরে স্থানে স্থানে কিরি। দেখিল অপূর্ব্ব এক সুনির্মিত পুরি ॥ প্রস্থরেতে সব গৃগ দ্বার সুনিন্মিতি। পুষ্পোদ্যান স্থানে স্থানে আছুয়ে রচিত !! এইৰপ শোভা দেখি নরেশ নন্দ ন। আপন জাহাজে পরে করিল গমন।। পথে যেতে স্বচক্ষে করিল দুরশন। রাজ পথে চলে যায় কারাবাদীগণ্য 🕒 তার মধ্যে দেখে তার ছয় সহোদর। বুঝিতে না পা**হ**র মশ্ব ভাবিত অন্তর ।। কি মতে এমত কর্ম হবে তা স্বার। मरन कारव खरम तुबि मिशे अक्षकात ॥

এইৰূপ বিবেচিয়ে নিকটে আইল। দেখি স্বাকার দশা খেদ উপজিল।। পরস্পর সবে সবে করি নিরীক্ষণ : অন্তির হই**য়ে স**বে করয়ে রোদন।। বহু দিন পরে সেই বিচ্ছেদ অনল। মিলনে হইল আরো দিগুণ প্রবল 🛭 এ প্রকারে সবে মেলি ধৈন্য নাহি ধরে। শেকেতে নিময় হয়ে হাহাকার করে।। পরে যে রক্ষকগণে বজু রত্ন দিয়ে। অপেন জাহাজে গেল সহারে লইরে ॥ চিরদিন বিচ্ছেদেতে যে সব **অনল** । শোকানলে আঁথি জলে নিভায় সকল । তদন্তরে কুমার স্বায় স্থাইল। বল শুনি এছুর্ঘটি কেমনে ঘটিল।। সুমিষ্ট বাক্যেতে তবে ছয় সহদরে। অনুদ্য অন্ত সমাচার কহে কুমারেরে ॥ य कर्प वाकनी भटक अवरण श्रमिता। একে একে সে সকল বৃ**স্থান্ত কহিল।**। যেহেতুতে কারাবাস হয়েছে সবার। একে একে সমুদর কছে সমাচার।।

व्याक्तयी भागिक श्रीने भवाद वहन । পরে আপনার মত ক্রে বিবরণ ১ তার পরে স্বাকারে যাল্লতে কুমার। খাদ্য জৰা নানা বিধ কঠান আভাৱে :: এই সব্মহানন্দ সবে মেলি করে: ইতি মধ্যে করে(ধ্যক্ষ জাইল সন্তুরে ॥ বলে মহাশয় আমা মাং হ্রপা করি। ८मर ছग्र कात्रानानी हहेन नहारी । শুনি কথা নুপদ্ত তা স্বানে কর। অন্য নিশি রাখি যাহ হইয়ে সদর । এক বলি পুনরায় বছ ধন দিল। সম্বৰ্ষ হইয়ে সংব বিদায় হইল !! ভবে সবে এক ভাবে একত্র হইয়ে ! **স্থা**থতে বঞ্চায় নিশি কৌতুক করিরে॥ নিশি শেষ করি পরে ভাই সাত জন। প্রভাতে উঠিল শ্বরি শ্রীতর্গা চরণ ॥ নিত্য যত কর্ম তবে করি সমাধান। কুমার বসিয়ে ভাবে দবার বিধান 🛭 কি প্রকারে এসবারে করিব উদ্ধার। ভাবিরে চিস্তিরে কিছু নাপাই ইহার।।

ইতোমধে কারাধাক আসি সেই স্থলে भारत करता क्याद्वरत मकक्**र** रहा ॥ দেহ ছয় কারাবাগী দয়া করি সবে। লচেত শুনিলে ভূপ মেরে প্রাণ পরে ব ণ্ডনি বাণী অমনি প্রবাস ছয়জনে। যিনতি পুরাক সবে কলে সক্রণে ।। যাহ হাদ্য মম সাধা কি বা আছে আর অন্তি তালি মধ্যে আমি করিব উদ্ধরে। এত বলি করে,বাক্ষণণেরে ভাকিলে : হাতে ধরি সবাকারে দিল সমপিয়ে ।। मकान करिन शहा महान महान । র-সিবে এসবাফারে করিটে যতন।। নিত্য আনি দেখা করাইবে একবার। বহ ধনে ভেঃমারে করিব পুরস্কার ॥ একথা শুনিয়ে সবে যে আজ্ঞা বলিয়ে ৷ যক্ষে ছয় সহোদরে চলিল লইয়ে।। ভদন্তরে কুমার ভাবিত মনে মনে। ি প্রকারে এসবারে উন্ধারি কেমনে।। কিন্ত বলে কেন ভাব রাজার নন্দন। মত্ৰ বলে আছে তব অসাধ্য সাধন।।

কুমারের মন্ত্র বলে উদয় রাজ কন্যা ভবনে প্রবেশ !

শুনি রুমর খেন করি নিজ যাজ-চলে অভি ২লা কৰি। बन्नि गारा खाल, कर्दिन भवान শশ্রেরেকেরে গ্রিটা ম্ভিব ব্লেডে, লা চেনে অনেট্ড, इतिराह्य भन्न हरते। कुर्तन भरत, उत्तिमु जा उन, राज्ञ परा अंगर्गिता । গ্রার প্র গ্রিয়ে, নগ্রনে দেখিয়ে, রালার অন্সর বত। যেতে এপ্রকারে, কন্যার আগাতে, শেষে হল উপনীত !! भाग मार्थी शहर, या ८६ हत बहर्स, গোপ্রে থাকেন রায়। न्द्रशत नामनी, मक्ष संक्रिपी, হেরিয়া পুলকে কায়।।

তা সবার ৰূপা, নাহিক স্বৰূপা, অনুপ্র জিজগতে। একেতো ৰূপনী, ভাহাতে যোড্নী, ব্যবহাতে পালফেতে।। ফেপিলে কামিনী, জগত মোহিনী, লেছেও হটল মন। are कि अक्षात किन धनवाद. ক্তি জপে হবে মিলন।। এত ভাগি বায়, চাতকের প্রায়, দেখা দিল স্বাৰ্ণালে। ফাণকাল পালে, চলিল শভারে, আগেল কাছোল গাবে । হেতা রূপ হেরি, সে মুগ্র প্রকরী, অব্ধ হইয়ে অভে ৷ ধরাতলে পড়ি, যায় গড়াগড়ি, मतीय माक जनका। দেখি যত দাসী, জতগতি আসি, ধৰাধবি কবি তোলে! कि इल कि इल, वल मशीमल, সকলে কবিল কোলে।।

व्यानमः-।वनागः।

রাজার কুমারী, সে সপ্ত অন্দরী, करङ् मरन अञ्चरत्। বিছাত আকার, আমা ধ্বাকার, শ্রীর ভেদিল **স্বরে**। যৌবন সাগর, অপার ছস্তার, আনরা তরণী ক্ষীণ। বাঁচিব কেমনে, বিরহ আত্থণে, হইয়ে নাবিক হীন। क्षिन मशीलण, करत निर्वतन. ধৈৰ্ঘ্য হও ৱাজবালা। रेक्ष्म इत्ल भारत. मिलियक ভারে, অবশা ঘুচিবে জ্বালা!! এই कथा व्यक्ति नदत्रम निक्ती মনে মনে বসি ভাবে! विक वत्त जत्त, किन जात गत्त. আজি কালি মধ্যে পাৰে !!

কুমারের অদর্শনে কুমারীগণের খেদ।

এমতে সকলে বিমনা হয়ে। পাইব কেমনে ভাবে বসিয়ে।। রাজাব তুহিতা মোরা সকলে। एटव दक्त रहत घटि क्रशाल ॥ যাহার শা**সনে সমনে** ভরে। ভাহার ভবনে কি আসিবে নরে । যে হক সে হবে আ মরি মরি। প্রাণেতে বঁ।চিমে পুন না হেরি॥ কি করি কি করি বহিতে মান। একে নারী নারি রাখিতে প্রাণ।। স্ত্রীর পতি বিনা গতি কি আন। বাঁচাও না বাঁচা এক সমান।। কামিনীর তারা জাঁখি পতি। তারা হিন জন নাহিক গতি।। সংহনা থাতনা আ মার মার। গরল খাইব মনেতে করি।।

এখনি আমরা প্রাণ তেজিব। অনলের মুখে আজি পড়িব। এৰপে করিতে আফেপ ধুনি। বুঝাইল ভারে যত রমণি।। এমত দেখিয়ে সে সহী দলে। স্থান: হার সবে করায় বলে 🖰 এখানে রদিক গিয়ে ত্বরিতে। র্মিক গণেরে লাগে ভানিতে : ক্ষণ কাল পরে রাজ কুমার। সানাদি করিয়ে করে আহার । এমত কালে চয় ভাতাননে। আইল তথায় রক্ষকগণে॥ দেখিয়ে কুমার হবিত হয়ে! नाना प्रवा भवा जुक्षाः। नातः।। পরেতে সকলে বিদায় হয়ে। কারধ্যেক সনে গেল চলিয়ে॥ দেখিয়ে এমত দৃষ্ট ঘটনা: দ্বিক্ষের মনেতে হল ভাবনা।।

সর্ব কনিষ্ঠা কুমারীর সহিত কুমারের সাক্ষাৎ।

নানা মতে ভাবি তবে নরেশ নন্দন ! বেলা অবসানে চলে করিতে ভ্রমণ।। ব্রাজ পথে চলি যায় হয়ে সুসজিচুত। আশ্বর্যা গুনহ্ তাহে দৈবের ঘটিত 🛭 सद्तम समित्री सद्धा कमिन्नी य कमा সবে হতে শ্ৰেষ্ঠ ৰূপে স্তদুশ্য গঠন ! যে অবধি কুমারে সে দেখিছে নয়নে দিবা নিশি ভাবে বসি সাপনার মনে।। বার ঝর ধারা বহে নয়নেতে ভার। বিরহ্জালাতে সদা দেখেছে আঁধার ট স্থ সজ্জ। আর কিছু মনে নাহি লয়। এলাইত কেশে পড়ি ধরা তলে রয়॥ य जन कथन कान जातन ना त्रमना তারে সহ্য কোথা হয় বিরহ যাতনা 🗉 তাহাতে বসম্ভ কাল কুটিল কোকিল। তসিল মসিল দায় দত্তে লাগে খিল !!

এৰপ অধৈষ্য হয়ে বেলা অবসানে।
গবালের ভাবে বসি চার পথ পানে।
হেন কালে সেই পথে রিকি বতন।
অখাৰতে চলি যায় কৈল নিরীক্ষণ।।
বে ৰূপ অন্তরে ভাবে মন্মথমোহিনী।
দে ৰূপ অন্তরে দেখি আফলানিত ধনী।।
কুমার তাহারে পরে করি নিরীক্ষণ।
হৈল ভাবার ৰূপ তরক্ষে মগন।।
মিলন সলিল আশা মন মধ্যে করি।
উভরে রহিল উভরের পানে হেরি।
প্রাপ্ত যার যা বাঞ্জা এইত সময়।

কুমারকে রাজ কুমারীর নিজ ভবনে আনয়নের পরামর্শ।

দেখি দোঁহে ছই জন, মন হল উচাটন,
কামিনী অধিক ব্যস্ত তায়।
.গিয়ে নিজ সথী পাশে, অতি মৃতু মৃতু ভাষে,
বিবয়ণ কহে সমুদায়।

ঐ দেখ সহচরি, মম মন চুরি করি, যায় সেই পুরুষ রতন। সখী শীঘ্ৰ গতি যাও, সক্ষোপনে বাৰ্ত্তা লও, কিবা নাম কোধা নিকেতন।। আছে কোথা বাসা কবি, স্বাপন চক্ষেতে হেরি, এসে বল মম সলিধানে। শুনি স্থা এবচন, করিল শীঘ্র গমন, गुरुषत नक्तन (यहे शारन।। করি কত সবিনয়, কছে কই মহাশয়, কিবা নাম কোথায় নিবাস। আছ কোথা করি বাসা, কহ মরে সত্য ভাষা, অভিলাষ করিয়ে প্রকাশ।। আশয় বুঝিয়ে তার, তদন্তরে দে কুমার, কহিতেছে স্থীর সদন। যে ভাবে এসেছ তুমি, সে ভাবনা ভাবি আমি, পরিচয় করহ ভাবণ।। বঙ্গাধিক্য মম ধাম, সুরসেন ধরি নাম, অবিজ্ঞাম ভ্ৰমি নানা দেশ। অনেক নগর ফিরি, বাহন করিয়ে তরি, এনগরে আসি অবশেষ।।

করেছি নৌকায় বাসা, শুনি এ আশ্চর্য্য ভাষান আমি মাত্র জানিতে কারণ। কি কব করি,প্রকাশ, মনে ঘাহা অভিলায,

রেখেছি ভা করিয়ে ধারণ।।

र्श्वन मानी श्रून कड़, छन छन इनमज़,

কিবা ভয় করিছ আপনি।

তব ষংহা অভিপ্রায়, বুকেছি ভা সম্দায়, আমি মিলাইব গুণমণি ॥

এৰণ কুমারে বলি, ক্রত গতি যায় চলি, যথায় আছেন রাজস্তা।

ষতেক করে শুনিল, সর গিয়ে নিবেদিল,

হইরে পরম হর্য যুতা।।

छ निरंत्र अनव वाधी, शून टादत करइ धनी,

यार नश्री जान निरंत्र ठाटत ।

করি তাঁরে দরশন, কব সব বিবরণ, বে রূপে পাবেন মো সবারে॥

শুনি সথী কর যোড়ে, করে ধনী বরাবরে, একি কথা কহ ঠাকুরাণি।

ষে পুরে শমন ডরে, কেমনে আসিবে নরে,
ভয় হয় শুনি তব বাণী ॥

পরে শুনি ধনি কয়, কেন তব এড ভয়,
অদীম নাদীমা হয় যাঁর।
দ্বিজ বলে হেন জনে, অসাধা কি ক্রিভুবনে,
তিনি ভাবিবেন পথ তার।

কুমারের কুমারী সদনে উপনীত।

करा के श्वास स्था वास हिल क्षण्ड ।

यथास महत्रमु छ् उथा छेशनिङ ॥

कुमातीस तिरवर्ग कहिल नकल ।

एए इहर तमता क मीख हल हल ॥

श्वास वाणी व्यम्ति मश्वीहत कहि तास ।

याह व्यह्य कह जात याहेव उथास ॥

कु विल मृजीहत विमास कित मिल ।

मस शिष्ठ शाह्य शाह्य व्यास हिला ॥

कथाहम क्षण्ड शाह्य व्यामा श्व हिला ॥

हम काह्य श्वास व्यामा श्व हिला ॥

हम काह्य श्वास व्यामा श्व हिला ॥

हम काह्य श्वास व्यामा हम हम ॥

हम काह्य स्वामा हम हम हम ॥

हम काह्य स्वामा हम हम हम ॥

নাগরের মনঃ প্রাণ করিতে ছরণ। ञ्चायुथी ञ्चामम कव्टिह वहन।। ভাজি লাজ রস্যাত কৃহি হে ভোমারে ! **८मशा मिट्स कोटीटकटल वस्स् व्यामादत् ॥** ষে দিলে আমরা সবে দেখেছি ভোমার। বিশেষ ব্যাধিত তায় হয়েছে হৃদয়।। নতুব। কখন কেশা রমণী হইয়ে। অত্যে কথা কছে কোথা পুরুষে ডাকিয়ে ॥ তবে আর আধিনীরে কেন হে নিদয়। আজ্ঞাকর পরে মালা দিব মহাশয়॥ তদন্তরে কুমার ভাবিরে মনে মনে : বুকিল বিবাহ নহে উচিত এক্ষণে॥ चुकारत्र कद्भिव कांधा राज्य श्रद श्राटव । ष्मश्यम विदिव कनक मान्य पारम ॥ বিশেষত কারা বন্ধ আছে ভ্রাতাগণ। তা সবারে কোন ছলে করিব মোচন।। এক্সণে উচিত এই সম্মতি লইয়ে। ৰিবাহ করিব পরে প্রতিজ্ঞা পুরিরে ॥ তাহাতে হইবে মোর সর্বত্তেতে যশ। সর্ব্ব কার্য। সিদ্ধ হবে এ মোর মানস।।

এত ভাবি কামিনীরে কহে রসময়! দে কহিলে হেন কর্ম্ম কভু ভাল নয়।। শেহেতু ভূপের পণ অগ্রাহা করিরে। বরিবে আখারে ভূমি কামে মন্ত হয়ে।। যেহেত উদ্দেশ বলি দাও হে আমারে। যাহাতে চিনিতে পারি ভোমা স্বাকারে । শুনিয়ে আহলাদে মগ্ন হইয়ে অশেষ। বিবাহ প্রতিজ্ঞা পূর্ণ করে উপ**দেশ** ॥ শুন হে বুসিক বাজ মো সবার পণ। একারতি আছি মোরা ভগ্নী সপ্তজন ৷ যে দিনে চিনিতে ভূমি যাবে রাজ বাসে। শ্রেণীবন্ধ সবে রব সবাকার পালে।। মম পালে মম জোঠ শুন ওছে রায়া এ প্রকারে রব তাছে নাহিক সংশয়।। বিস্মৃতি না হয়ে থেক নিমুভাগে হেরি। মৃত্তিক। খুঁড়িৰ পদ অঙ্গুলিতে করি।। ইহাতে বুঝিবে সধা যে যেখানে রবে। ষিদ্ধ বলে আর তব বলিতে না হবে॥

কুমারকে কু মারী পরামর্শ দেন।

উপদেশ পেয়ে রায় চাহিল বিদায়। কথা শুনি ভাবে ধনী বিচ্ছেদের দার। কহিছে কুকুণা করি হয়ে সকাতর ৷ অভিক কি কৰ আৰু শুন হে নাগর।। প্রাণ পণ করি তবে গেরেছি ভোমার। कि कर्प उन्र दरान आर्थ कविव विमात ॥ আর কিছু ক্রণ থাক করি নিরীক্ষণ। ষ্টাথি স্থির হলে প্রাণ করিবে গমন।। আমি কি বলিব তবে যে হয় উচিত। বুঝে স্ববে কর যাহা হয় স্থবিহিত ॥ কি দিব বিদায় আর করি অনুমান। সবে ধন ছিল প্রাণ করিয়াছি দান।। প্ৰাণ ৰূপ পক্ষী তব সঙ্গেতে চ**লিল**। এদেহ পিঞ্চর মাত্র পড়িয়ে রহিল।। এমত করুণা বাক্যে নাগরে ভুষিয়ে। বিদায় করিল শেষ কাতর হইয়ে॥

ত্বরিত গমনে তবে রসিক রতন। অপিন জাহাজে পরে করিল গমন 🛚 পর দিন প্রভাতে করিরে নিজবেশ। ভূপের ভবনে গিয়ে উত্তরিল শেষ 🖰 জানি নীত উপনীত যথা ঘণ্টা ছিল। কুমার ধরিয়ে তাকে ঘন বাজাইল।। নেই ধনী নূপমণি শুনিয়ে প্রথণে। माम এक भाष्ठीतनम कुमात अन्दम ॥ যোড় করে কুমারের করি সমদের। বলে চল মহাশর ভূপের গোচর।। শ্ৰুত মাত্ৰ নৃপস্থত ভাবি রাজনীত। ভাবে ভূতা বাক্যে মম যাও অনুচিত।। তদন্তর কুমরে এগব বিবেচিয়ে। পাস্কারি করি ফেরে বাক্য না কহিয়ে।। না বুঝিয়া মর্মা কিছু দাস সেই জন। যা**ইয়ে ভূ**পের পালে কহে বিবরণ ৸ বুন্ধিমন্ত নরকান্ত বুঝিয়ে ভাহায়। প্রেরণ করিল এক মন্ত্রীরে তথার॥ ভারবান মৃদ্রিবর বিচক্ষণ অভি ৷ নৃপস্থত ৰূপ দেখি হল ক্ট মতি।।

পরে বছ সমাদরে তুবি মিন্ট ভাবে। কুমারে লইয়ে গেল ভুপতির পাশে!! নরেশ দেখিয়ে রূপ প্রশংসি বিস্তর। म श्रायम कति वह करत ममानते।। পরে পরিচয় পেয়ে আজ্ঞাদিও মতে। যত্র করি বসাইল রত্ন সিংক।সনে॥ আনৈ নানা খাদা দ্রা করি আছরণ। কত কব নাম তার কে করে বর্ণন । কত মত এপকার করি আয়োজন। নভেশ কুমার ভবে করেন ভোজন । **उन्छत कुम**ंदत कहिए नत तास। আপনার মন গত যত অভিপ্রায় 🛭 একারতি কন্যা মম আছে সপ্ত জন। ষে চিনিবে ভাহারে করিব সমর্পণ।। না পারিলে কারাগারে রাখিব তাহারে। ष्यगुर्माठ रुष्न यनि षानि मवाकादत । এমত শুনিয়ে বাক্য হয়ে হুট মতি। নরেশ কুমার তাহে হইল সম্মতি 🛊 তদন্তর পুলকিত হয়ে নৃপমণি। স্থীগণে আজ্ঞা দিল আনিতে নন্দিনী 🛭

अनि मात्रीग्यं मत महामः वनत्न । विविध श्रकारत माजाईन कन्मानत्न । পরাইল অঞ্জে নানা বসন ভূষণ। বিনাইয়ে দিল বেণী অতি স্তুচিকন।। वनम भनम भौति धना धना छता छ। करेशक पूर्विट यूनिशन यन देखा। একে সে कथमी टाइड माना माज कति। **ठिक मत्था छलि यात्र शमानटङ कती ।** তনেত কুমার উঠি দবারে ছেরিল। क्षेटिक नवात मन भाहिए कतिन ? আছিল পূৰ্বেতে ৰূপ অন্তৱে প্ৰবন্ধ। पिथितः कृभातः भव रुट्न भीजन ॥ তবে সৰে মনে ভাবে পাইব কেননে। ভত্ধিক কুমার ভাবিছে মনে মনে 🛚 কামিনির উপদেশ অন্তরে ভাবিয়া। স্বাকার পানে তবে রহিল চাহিয়া 🛚 पिथिन मतात नाटम किन्छ। सुन्दती। रुडिका थनन करत भनाऋनि कति । তাহাতে ৰুঝিল রাম গে বেখানে ছিল। 🦠 একে একে সবে চিনি ভূপে যানাইল।

দেপি নরপতি অতি হইয়া উলাস: আনন্দে নিমগ্ন হয়ে লাহি স্বরে ভাব । ভূপ বলে পূর্বে তাগ্য আখার আছল। तिहे (र्जू गय कीर्डि मानन भूदिल। এডবলি আলিফ্স করি কুমারেবে। বদাইল যত্ন করি নিংহাদন পরে। তদশুরে র'জপুত্রে কহিল রাজন। বিভা কর যুবরাজ দিন শুভক্ষ । শুনি বাণি অমনি যুড়িয়া কর দয়। মনে যাহা ছিল ভাহা কছে সমুদয়। তব कना। विका कना। बन्ति यव जन। অভিপ্রায় সে ববায় করিব মোচন।। শুনি কথা মহিপতি পাইল স্বীকাব। ৰিজ বলে ও মতে অমত আছে কার।

ছয় সহদরের কারাগার মুক্ত।
পরে শুন অপরূপ, কারাধ্যক ডাকি ভূপ,
কহিলেন সব বিবরণ।
কুমারের আজ্ঞা মত, আন বন্দিগণ যত,
বধা যোগ্য দেও সবে ধন।

শুনি বাণি ভূতাগণে, আনি বন্দি যত জনে, कू मात्र मभीत्म ममलिन। ঁন্পস্ত তদন্তর, দিয়া রত্ন বহু তর, স্বাকারে বিদয়ে করিল। পরে ভ্রাভা ছয় জনে, ভক্তিভাবে শৃষ্ট মনে, वमारेल कति ममानत्। **ट्याकृतर**१ (कार्ष कार्य, मिल इंट्रेटल (खर्ष करवः শিষ্ট ভাবে ভূষিল বিস্তর 1 **সমদত্ত** দেখি ভাবে, কুমার যে ভাতৃ সবে, কি ভাবে এভাব ভাবি ভাই। বুঝে রাজা অন্মভাবে, কু মারে জিজ্ঞানে তবে, এ ছয় জন কে তব সুধাই। শুনি বাণি ভূপ কয়, যোড় করি করদয়, সবাকার যতেক রুভান্ত! যে জন্য ছাড়া ভবন, যেহেতু হইবে পণ, পুনর্ফার মিলন একান্ত।। এই মত বাক্য শুনি, আনন্দেতে নৃপমণি স্বারে করিল আলিক্সন। বহুমত সমাদরে, বসায়ে পালক পরে, একে একে করে সম্ভাষণ।।

পরে ভূপ মৃদ্র ভাষে, কহিছে সরার পাশে, দেহ কোমাঞ্চিত দাবভাৱে। দিয়াছি মন্ত্ৰণ যত, দে নৰ হয়ে বিশ্বত, মোৰে নিজ্ঞাণ কথা কৰা! শুনি ছয় গুণাকারে, কহিতেছে চচ্চস্কারে, কি হেত্ত ভাৰহ এ প্ৰকার। কর্মা স্থুত্ত আছে বাহা, কে গণিতে পারে তাহা, ইথে দোষ কি জাতে ভোমার॥ এই নূপ ব্যক্তা ছলে, ম'স্বায় করি সকলে, মূপতি কুমার অণি কয়। ছিল বাঞ্চ যে যাইছে, পূৰ্ণ তা হল সবার, এফণে ভরস পরিণয় ৷ শুনিয়ে এনৰ বাণী, ষ্ডিয়ে যুগল পাণি, महीशाल कविष्ठ राज्य। জ্যেষ্ঠ বিদ্যান ন্য যথা, কেমনে ক্ৰিষ্ঠ তথা, অধিকারী বিরস বননে।। অতএব শুন রায়, তব সপ্ত চুহিতায়, ছয় ভ্রাতা করিব বিবাহ। ইথে তব অভিপ্রার, উচিত যে মত হয়, সেই মতে করহ নির্বাহ ।

এই মত বাকা গুলি ক্ষিত্তত স্থান্ত

হোমা সবা অধিকার, আমার এ আধকার,
অধিকার কি বলিব অ'মি॥
তুমি তব ছয় ভাতা, নাহি মম বিভিন্নতা,
সম ভূলা দেখি সবাকারে।
ডিজ্কয় অকপটে, এযুক্তি স্থ্যুক্তি বটে,
বিভা কর ছয় ছহিতারে॥

ছয় সভে। দরের বিবাহ। সভায় ব্সিয়ে ওবে ডাকি মন্তাজনে। प्राक्ता पित भरीशान प्रका व्यारहर्त ॥ আজন মাত্র প্রহত করিল সমুদর। পুরোহিতে ডাকি করে দিনের নির্ণয়। পারে শুভক্ষণ দিনে করি বর বেশ। রত্ব গ্রহে ছার জনে করয়ে প্রবেশ।। পরে ছয় ছুহিতারে সপ্ত সিংহাসনে। বস্ভিয়ে আনিল স্বার বিদ্যমানে।। ৰ্ক্তা আচার ব্যবহার ছিল যে প্রকার। প্রদক্ষিণ করাইল সপ্তে সপ্তর্বার ॥ किनिएं कनिएं। कना (कार्ष कार्य कम। এই মত হতে হত করিল বন্ধন।। বাদ্য ভাও মহাকাও আনন্দ অপার! এই মত হয় কত আশ্চর্যা ব্যাপার ॥

जानम-। तलामा

নরেশ আনদেদ মগ্র মনেতে বিচারি। বিধিনতে ছয় জনে মঁপিল কুমারী 🎚 বিবাহ নির্ধাহ দেখি যত রামানণে। হলাছলি দেয় সবে আনন্দিত নান 🛭 ফন্য পাত্র লয়ে মনে চলিল বাস্তে: বাজিল বাজনা গায় কিয়র সুখ্বরে! এথ স্থার বাদ ঘরে রামাগণে কয়। इंगिको इंगिएक केथा 😇 मञ्जूषरा 🛚 স্থাকর দুর্কে ভৃষ্ট যে মত চকর। ক্মলের মকরনের ভূটী মধ্কর 🕻 স্থজনে স্থজন তথা হইল মিলন। বাসর তেজিয়ে ভবে যায় রামাগণ । বি**রল পাই**রে তবে যাতক কুমারে। প্রেম রুপে নবরুসে ভোষে স্বাকারে । নানা মতে করে কছ কবি আলাপন : ভাবে বুঝ এভাবে ভাবক ষেই জন।। সম্বপ্ত আছিল বিবৃহিণী ধনীগণে। রিগ হল সেই ত্বালা নাগর মিলনে। যামিনী প্রভাতে উঠি ছার সহদরে। উপনীত হল সবে ভূপ বরাবরে। আনক্ষেতে হয়ে মগ্ন সোমদপ্ত রায় ৷ কৌতুকে জামাতাগণে বসায় সভায়।।

এইৰপে মহানদে নূপ পুত্ৰগণে। महायूर्य सूर्या मत्व श्रुष्टत उवरन ह ু কিছু দিন পরে সপ্ত নরেশ তনয়। ভূপের সমীপে গিয়ে স্বিনয়ে কয়।। ব্রুদিন দেশ ছাড়ি মোরা ছয় জন। আসিয়াছি বিদেশেতে করিতে ভ্রমণ চ . গুহে মাতা পিতা বন্ধু আছে বহু জন। ত্যজিয়ে স্বারে করে প্রাণ উচাটন।। অত্এব যদি ভূপ হয় অনুমতি! চিন্তা দূর করি গিয়ে আপন বস্তি॥ আর এক অভিপ্রায় মো নবার মনে। সঙ্গে করে বারে যাব তব কন্যাগণে 🕕 জামতাগণের বাক্য শুনিয়ে রাজন। কহিতে লাগিল হয়ে সঙ্গল নয়ন !! কন্যা দিয়ে পাইয়াছি সপ্তগুণ নিধি। পুদ্রাধিক বাসি আমি সে দিন অবধি।। পাঠাইয়ে দিব যদি ভোমা সৰাকারে। কেমনে রহিব বল এছার সংসারে।। এৰপে জামাভাগণে কহিয়ে ভুপতি। পরে পাঠাইতে সবে হইল সম্বতি॥ দিয়ে নানা রতন যৌতুক জামাতায়। কুন্যাগণে নররায় কৌতুকে পাঠায়॥

माम मामी मध्य जात मिल जूभ करा। মাত্রু তুরুস্থাড়ী পাল্কি শত শত।। আর সপ্ত জাহাজ দিলেন সপ্তরে: পূর্ণিত করিরে নণি মুক্তা আদি ধনে।। थाना ज्वा नान! विव जान्ध्या या छिल। ক্রমে ক্রমে জাহাজেতে পূর্ণ করি দিল। তবে কন্যাগণ রাণী নিকটে মাইটে। বিদায় চাহিল পাদে প্রথাম করিছে 🛚 শুলি অ'হল্বদেতে রাণী চুল্লিয়ে বদন। খাদা দ্রব্য নানা বিধ করায় ভোজন । তদস্তব প্রণমিয়ে জনক জননা। স্থামির শহিত চলে লইয়ে দলিনী :! দিন শুভক্ষণে তবে সপ্ত সহদরে! আরোহণ কৈল গিয়ে জাহাজ উপরে।। **अञ्चल १** वृत्ति फिल १ (य दिशंदान । ইলারর্ত্ত দেশ চলে ছাড়ি কত স্থান।। দ্বিজ নিজ ভাবে অগ্রে ৰূপবতী পাশে। কুমারের সমাচার কহিল-বিশেষে॥

আসক্ষাব্দান।

সপ্ত সংহাদরে ইলাবর্ত্ত দেশে আগমন ।

হেন শুন রসবতী, পুলকিত হয়ে মৃতি, অত্রে গিয়ে দারে দাঁড়াইল। হৈত। তটে গুণধাম, তোপ দাগে অবিশ্রাম, ধনী ধুনি শুনিতে পাইল।। তদন্তরে রসময়, ভাতাগণ প্রতি কয়, পূর্ব্য কথা করিয়ে স্মরণ। যে মতে রাক্ষমে বধি, প্রাপ্ত হল রত্ন নিধি, বিস্তারিত সে সর কথন।। অতএব নহাশ্র, যদি মোরে আজা হয়. অত্যে আমি ঘাই সেই স্থানে। পরেতে রাখিয়ে তরি, কিঞ্চিত বিলম্ব করি, এস তথা তে"মরা সকলে।: এত বলি বসরাজ, না করিয়ে ক্ষণ বাজি. काभिनीत निकटि हेलिल। ম্বে ধনী দাঁড়াইয়ে, আছে আশা পথ চেয়ে, ट्न काटन नाशत (मर्शिन II আনন্দ সাগরে ভাসে, আসিয়ে নাগর পাশে, কহে কত করি অভিমান।

व्यानमान्यनाचा

নাগারের করে ধরে, অনেক বিনয় করে, আনন্দেতে হয়ে ভাসমান ॥ করি খেদ মৌন মুখে, রসবতী অতি ভূপে অধোন্যথে নির্থিয়ে ধরা ! कीरन অতি भकारत, यभन नश्चन नीर्द्र, ভাষে ধরধের জিনি ধারা ৷৷ কি কৃহিৰ মন তথ্য, পেলে স্থয় দিলে তুঃখা (मृत्यं सूच हुः व **सूर्या**न्त्र । তুঃখ নিশি অবনান, পাইয়ে জোমারে প্রাণ, সুখা গত গেল তুঃখোদ্র।। শুনি কামিনীর কর, ধরিয়ে ক্তে নাগর, স্থমিউ বাক্যেতে ভাষ মন। র্সিকা কামিনী ভূমি, অর্সিক মত আমি, দিয়েছি হে অনেক যাতন।। অতএব ত্যাজি রোষ, ক্ষমহ সকল দেবে, হইয়ে আমারে কুপাহিতা। শুনিরে মধুর বাণী, আনন্দিত হয়ে ধনী, জিজ্ঞাসিল কুশল বারতা।। उम्बद्धत त्रभारा, कदह कथा मामूनरा, যথা যাহা হইল ঘটন। ভার্য্যা ভাতা সঙ্গে করি, বাহন করিয়ে তরি, যে মতে তথায় আগসন !!

এত শুনি রসবতী, আহ্লাদিত হয়ে মতি, প্রশংসিয়ে নাগরেরে কয়।

শুনিলাম কন্মতিব, মনুবোর অসম্ভব, সম্ভব ভোমাতে সমন্ত্র ৮

সম্ভব তোমাতে সমুদয়।।

এৰপ নাগর ননে, মিউ।লাপ ছুই জনে, করিতেছে হয়ে হর্ষিত।

হেন কালে সেই স্থলে, একত হয়ে সকলে, রাজপুত্রগণ উপনীত॥

দেখি তবে রসময়, কামিনীরে সমুদয়, সবাকার পরিচয় দিল।

শুনি বাদী ব্যবহার, করে ধনী দে প্রকার। কুমার সবারে সম্থাবিল।

পরে কইটো সবাবে, নানা বিধ উপহারে। সকলেরে করান্ আহার।

ভোজনাত্তে ভবনেতে, লয়ে অতি সাদরেতে, সভায় বসায় পুনবার!!

পরে ধনী মৃত্ত ভাষে, কহিল কুমার পাশে, আনিতে সভিনী যায়াগণে।

আর যত সমভ্যারে, আন যদি একেবারে, বড় প্রীত পাই তবে মনে॥

শুনিয়ে ধনীর বাণী, সেই ক্ষণে গুণমণি, আনিলেন স্বারে সংহতি। দেখি ধনী বিনা ব্যাকে, জায়া সতীনির মাজে মৃত্ লাজে ধীরে ধীরে গতি।। নকলের ধরি করে, লয়ে যায় নিজপুরে,

শ্বাদরে ব্সায় আগনে।
 খাদ্য দ্রব্য আয়োজন, করিয়ে ধনী রক্ষন,
 ভোজন করায় সর্বাজনে॥

পরে হয় দিবা গত, নিশা হল সমাগত;
জ্বিত ত্রিতে সবে যায়।

স্থরসেন নিশা ভাগে, কামিনীর মনো যোগে, মনোসাধ বাসনা পূরার i

বছ দিন পর যোগে, সুযোগ স্থােগ জােগে, যোগে যোগে কভ কথ। হয়।

নেও কত অনুযোগ, হয় যাতে ভঙ্গােগা, অঙ্গ যােগে সব জ্বঃখ ক্ষয় ॥

পরে সুরসেন বলে, রজনী প্রভাত কালে, .
বাঞ্জা তোমা লয়ে যাব দেশ !

এইরপ তুইজনে, কথা রূপবতী সনে, । বিজ্ব বলে নিশি হল শেষ।।

সপ্ত সংহাদরের স্বদেশ গমন ৷

প্রভাতে উঠিয়ে তবে মরেশ মনদন। নীতি মত কৰ্ম যত কৈল সমাপন II' लमस्दत (अध्भीदत विनदत रु.इन । মানস যা ছিল ভাহা পূৰ্ণিত হইল।। আত্রব শুন প্রিয়ে দিন শান্তক্ষণ। মম পক্ষে চল যদি নালর তব খন।। পতि नानी खरम धनी इरत मका छत्। বলে একি অধিনীরে কহ প্রাণেশ্বর ॥ যথন এদেহ মম দঁপেছি ভোমাতে। তব স্থাবে স্থী তুঃখ তোমার তুঃখেতে।। তাছাতে অবলা কুলবালা আমি নারী। কেমৰে ভোমার মত লক্ষিবারে পারি॥ বুঝিয়ে রসিক রাজ কামিনীর মতি। দ্রুত সবে ডাকি তবে দিল অনুমতি।। বত রত্ন জহরাত আছে এনগরে। উত্তোলন কর সব জাহাজ উপরে॥ আজ্ঞা মাত্র দূত্রণ নিযুক্ত হইরে। নান। সাজে কামিনীরে দিল সাজাইয়ে।। भन आदेश तमवजी धतिल (य (वर्ग। সে ভাব দেখিয়ে কাম হয় প্রাদেশসায় !!

পরে শুভক্ষণে রায় কামিনী সংহতি। আপন জাহাজে গিয়ে উঠে শীঘুগতি।। তবে যত নারী এসে একতা হইল। পরি করে সমাদরে কাছে বসাইল।। **टारव मध्यत्रश्य य.हेट** श्र**रमर्ट्य** । খুলিল জাহ'জ সব মনের হরিছে।। পরি তাজ দাঁড়ে বাজ বান্ধি দাঁড়িংটো। আলা আলা খোদা ভালা ডাকে নৰ্কজনে ভোল ডাক মহা জাঁক হাঁকে ভূভাগণ : ভোপের উপরে ভোপ দাগে কত জন।। এমতে যাইতে পথে কুমার সহার। অন্তরেতে উথলিল আমন্দ অপার। এই ৰূপ রক্ষ রুদে দেশে আগমন। खंड मम (हा दिला दिला मार्ड कार्यना) দুত গিয়ে ভূপতিরে সমাচার দিল। শুনি ভূপতির হুখ সিদ্ধু উপলিল।। ভদন্তর পুত্রগণ মঙ্গল কারণ। श्वारम हारम रेकल माना प्रक्रलाहत्।॥ পরে সক্রীকেতে সবে গিয়ে নিকেতনে। প্রণাম করিল পিতা মাতার চরণে । পুত্রী হেরি রাণীন্বয় আর মহীপতি : তেপর প্রাসা সংস্কৃত স্থাতি ব

ज्या क्या नवाकाटह वनाइटम काटन। শত শত চুয় দেন বদন কমলে।। পরে আদ্য অন্ত যত জিড্ডাসে নরেশ। শুনিলেন সুবিস্তার সমাচার শেব।। ধন্য পুত্র হুরনেন তুমিরে আমার। চিরকাল কীর্ভি যশ খোষিবে তোমার ॥ সপ্তম পুজের মধ্যে হইরে কনিষ্ঠ। শে কর্মা করেছ বাপু জ্যেষ্ঠ হতে প্রেষ্ঠ।। ইফ নিঠা শিফ ধারা গুণী সর্বাস্ত্রণে। রলিষ্ঠ রণেতে বিজ্ঞ বলিষ্ঠের স্থানে।। ভদস্তর শৃথে শুকে কৃমার লইরে : ভূপতীর **নমীপেতে** দি**ল স**মর্লিয়ে ॥ পুত্র পরিবার আর হুখ প্রাপ্ত হয়ে। स्रुट्थ काल इटत जूश काटन काँकि निरम्।। **জাতুর্গাচরণ হুদে** করিয়ে ধারণ। দিজ রামলাল এন্থ করিল বর্ণন।। অশ্ব পৃষ্ঠে স্থাকর সমুদ্র দক্ষিণে। শত নিৰূপণ হল বস্থুর মিলনে।। দশম রাশিতে ভোগ করে নিশাপতি। ষষ্ঠ দশ দিবা আর সপ্তমীর তিথি।।